चन्दामामा
अक्तूबर १९६६
75 P

धड़ाम
दिलीप और उसके साथियों ने दुर्घटना के समय मदद की

चन्दामामा
संचालक: चक्रपाणी
कहानियाँ वे ही अच्छी होती हैं, जिनका मनोरंजन के अतिरिक्त कुछ उद्देश्य होता है, जो शिक्षाप्रद होती हैं।
हम इस अंक में "भाग्य ऐश्वर्य से अच्छा है" कहानी दे रहे हैं। भाग्य उसी का साथ देता है, जो स्वयं परिश्रम करता है, परिश्रम करने की शक्ति और इच्छा सौभाग्य के ही चिन्ह हैं।
वर्ष: १८ अक्तूबर १९६६ अंक: २
CHITRA

भारत का इतिहास

दक्कन :

दक्कन सूबा, जो मुगल साम्राज्य में कभी एक परगना था, निजामुल्मुल्क के नीचे स्वतन्त्र हो गया।

बहादुर शाह के यहाँ इसने दो बार नौकरी की। १७१३ में फरुखसियर द्वारा यह दक्कन का गवर्नर नियुक्त किया गया। इसे तब निजामुलमुल्क का खिताब भी दिया गया।

इतने में फरुखसियर का राज्य काल समाप्त हो गया। निजामुलमुल्क को मालवा भेजा गया। यहीं उसने अपना भावी कार्यक्रम निश्चित किया। सैय्यदों को इसका रुख न जंचा। उन्होंने इसके तबादले के लिए फरमान जारी किये। इसने उनके फरमान को ठुकराया और सैय्यदों को मरवा दिया।

१७२० के अन्त में दक्कन फिर निजामुलमुल्क के आधीन आ गया। दिल्ली दरबार में जब अमीनखान वजीर की मौत हो गई, तो वह पद उसे देकर इसे १७२२ फरवरी में दिल्ली बुलाया गया।

उस समय दरबार का वातावरण बड़ा कलुषित था। बादशाह के मित्रों ने उसकी सलाह न सुनीं, यही नहीं, बादशाह से उन लोगों ने उसकी चुगली भी की।

यह देख वह इतना तंग आ गया कि १७२३ के दिसम्बर के तीसरे सप्ताह में दिल्ली से बादशाह से बिना कहे वह निकल पड़ा।

बादशाह ने चुगली सुनकर यह विश्वास किया कि वह उसके विरुद्ध बगावत कर रहा था। हैदराबाद के गवर्नर मुबारिज खान को हुक्म दिया कि युद्ध में वह

निजामुलमुल्क का मुकाबला करे। जीतने पर वह सारे दक्कन का वायसराय बन सकेगा, इस आशा से मुजरिब खान ने १७२४ अक्टोबर ११ के दिन विरार में युद्ध किया और निजामुलमुल्क द्वारा वह मार दिया गया।

बादशाह निजमुलमुल्क का कुछ न बिगाड़ सका। आखिर उसने उसे सारे दक्कन का वायसराय नियुक्त किया। यही नहीं; उसे आसफ़जाह का खिताब भी दिया। आसफ़जाहियों ने अन्त तक निजाम के सूबे पर शासन किया। हैदराबाद के स्वतन्त्र होने की यही शुरुआत थी। २१ मई १७४८ में, निन्यान्नवें वर्ष की उम्र में निजामुलमुल्क मर गया।

बेन्गाल :

१७०५ में मुर्शीदखान बेन्गाल का गवर्नर नियुक्त किया गया। वह बलवान और समर्थ था। उसने बेन्गाल राजधानी ढ़ाका से मुर्शीदाबाद बदली। १७२७ में उसकी मौत के बाद उसका दामाद शुजाउद्दीन खान गवर्नर बना। इसके काल में बिहार सूबा, बेन्गाल सूबे तक आया। अलिवर्दी बिहार का शासक नियुक्त किया गया। १७३९ में शुजाउद्दीन खान मर गया। उसका लड़का गवर्नर बना। अलिवर्दी और कई ने मिलकर साजिश की और उसे मरवा दिया। स्वयं बंगाल पर उसने आक्रमण किया। वह बंगाल का स्वतन्त्र रूप से पालन करने लगा। समर्थ शासक के सब लक्षण उसमें थे।

परन्तु अलीवर्दी का शासन निर्विघ्न रूप से न चल सका। प्रति वर्ष मराठे बंगाल पर आक्रमण किया करते। उसके अफ़गान सेनापतियों ने बिहारियों से मिलकर साजिश की। बगावत भी की।

अलीवर्दी मराठाओं के आक्रमणों का मुकाबला न कर सका। वह प्रति वर्ष उन्हें १२ लाख कर देने के लिए मान गया। उरीसा से जो उसको आय मिलती थी, उसका कुछ अंश भी वह उनको देता। १७५६ में एप्रिल में इसके मरने के बाद इसका पोता, नवाब सिराजुद्दौला (असली नाम मिरजा मुहम्मद) बंगाल का शासक बना। इसका शासन कुछ ही दिन रहा, पर वह कई कारणों से बंगाल और भारत के इतिहास में उल्लेखनीय है।

अवध :

अवध सूबे में आजकल का अवध ही नहीं, बल्कि पूर्व में वारणसी भी था। अलहाबाद, कानपूर भी उसी में थे। औध राज्य को स्थापित करनेवाला सादतखान, खरासान से आया था। १७२५ में अवध का गवर्नर नियुक्त किया गया और जल्दी ही काफ़ी प्रसिद्ध हो गया। नादिरशाह के आक्रमण के समय इसे दिल्ली बुलाया गया। उसी साल इसने आत्म हत्या कर ली।

उसके बाद उसका दामाद सफदरजंग अवध का गवर्नर बना। १७४८ में इसे दिल्ली का वज़ीर नियुक्त किया गया। १७५४ में मरने तक तत्कालीन भारत के इतिहास में विशेष भूमिका निभाई। इसका निजामुलमुल्क का लड़का और पोता मुकाबला करते रहे। इसके बाद इसका लड़का शुजाउद्दौला ने अवध पर शासन किया। वह भी दिल्ली में वज़ीर नियुक्त हुआ। उत्तर देश के इतिहास में इसका भी प्रमुख स्थान है। १७७५ में यह मर गया।
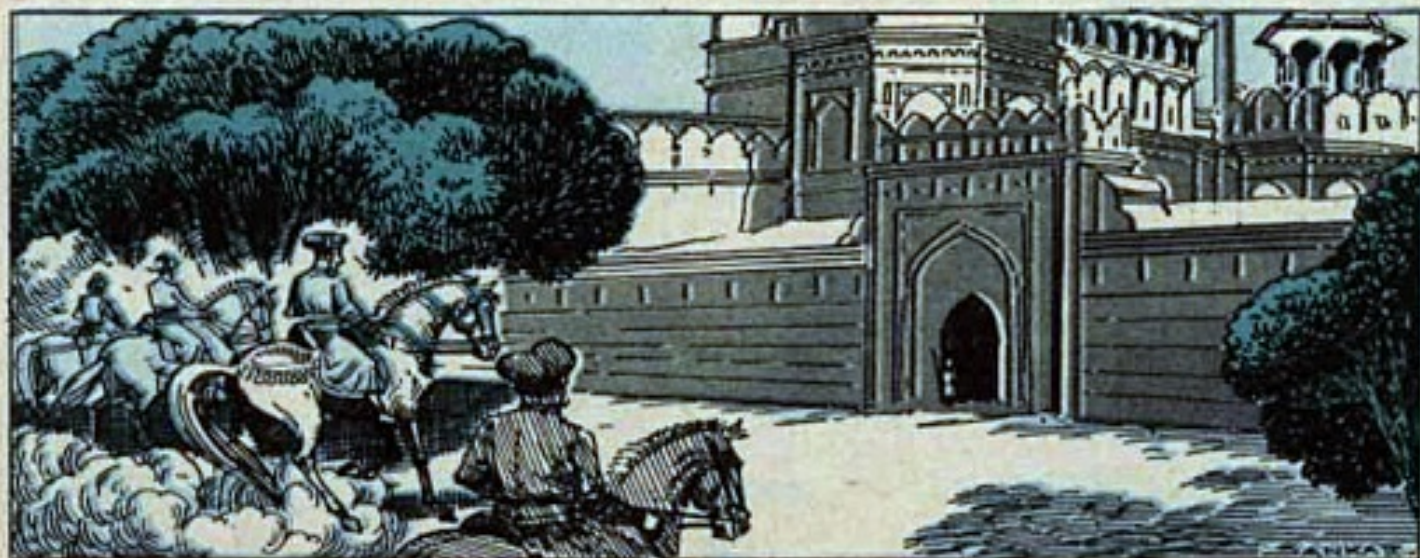
नेहरू की कथा

[२७]

१९२८ के अन्त में कलकत्ता में कान्ग्रेस का अधिवेषन हुआ। उसके अध्यक्ष मोतीलाल थे। सर्वपक्ष सम्मेलन की ओर से उन्होंने जो प्रस्ताव तैयार किया था। उसका इस अधिवेषन में प्रतिपादन होना था। जवाहरलाल नेहरू इस प्रस्ताव के विरुद्ध थे। उसमें पूर्ण स्वतन्त्रता का तो जिक्र था ही नहीं, डोमिनियन स्टेटस तक का भी जिक्र न था। पिता और पुत्र में राजनैतिक बातों पर पहिले भी कई बार मतभेद हुआ था।

मोतीलालजी ने सूचित किया कि यदि उनके प्रस्ताव को स्वीकार न किया गया, तो वे अध्यक्ष पद न स्वीकार करेंगे। इस रिपोर्ट के कारण कान्ग्रेस के दो पक्षों में फट जाने की अशंका थी। दोनों पक्षों में बातचीत हुई। समझौते शुरु हुए। आखिर समझौता हुआ कि कान्ग्रेस मोतीलालजी की रिपोर्ट का समर्थन करेंगी। परन्तु यदि ब्रिटिश सरकार ने एक वर्ष में उसमें सुझाये गये राजनैतिक सुधार न किये, तो कान्ग्रेस सम्पूर्ण स्वराज्य की माँग करेगी।

इस समझौते के विरुद्ध जवाहर ने खुले आम भाषण किये। परन्तु उन्हें भी एक तरह इस समझौते का समर्थन करना पड़ा। चूँकि इसके कारण कान्ग्रेस में फूट न आई थी और वैसे भी ब्रिटिश सरकार वे सुधार करने नहीं जा रही थी। १९३० में सत्याग्रह के लिए इस प्रस्ताव ने आवश्यक वातावरण बनाने में मदद भी की।

इसी समय मेरठ षड़यंत्र की सुनवाई भी शुरु हुई।

१९२८, १९२९ में मजदूरों में हलचल मची। उनकी हालत काफी बिगड़ गई थी। उससे पहिले कई सालों से कल करखाने के मालिक बहुत-सा मुनाफा बना रहे थे। पर उन्होंने मजदूरों की हालत सुधारने का कोई प्रयत्न न किया। इतने में मन्दी आई और इसका दुष्परिणाम भी मजदूरों को भुगतना पड़ा। बम्बई के और बंगाल के मजदूरों में नयी चेतना आई और उन्होंने हड़ताल शुरु की।

भारत देश में मजदूरों के आन्दोलन तभी तभी शुरु हुए थे। कलकत्ता अधिवेषन से जवाहर झरिया में हुए अखिल भारत ट्रेड यूनियन कान्ग्रेस में शामिल हुये। वहाँ उनको मालूम हुआ कि मजदूर नेताओं के दो दल थे, एक गरम और दूसरा नरम। उनका झुकाव "गरम" दल की ओर था। ये करीब करीब कम्यूनिस्ट थे, नहीं तो आधे कम्यूनिस्ट थे। बम्बई की गिरनीकामगर यूनियन और जी. आई. पी. रेल्वे मजदूर यूनियन आदि ससंगठित मजदूर संस्थायें इनके ही प्रभाव में थीं।

१९२९ सरकार ने यकायक प्रमुख मज़दूर नेताओं को गिरफ्तार कर लिया। इनकी सुनवाई को ही "मेरठ षड़यन्त्र केस" कहा जाता है। इसके अभियुक्तों की पैरवी के लिए एक कमेटी बनाई गई। उसके मोतीलाल अध्यक्ष थे। उसमें डा. अन्सारी और जवाहरलाल नेहरू आदि सदस्य थे। इस कमेटी के लिए महीनों मेरठ में रहना सम्भव न था। अभियुक्तों की ओर से केस लड़ने के लिए वकील चाहिए। बिना पूरी फीज़ लिए फ्लीडर भी मिलते नहीं नज़र आते थे। अगर पैसा जमा करके वकील रखें भी गये, तो कोई

ऐसी आशा न थी कि फैसला उनकी ओर ही होता।

इस बीच देश में राजनैतिक परिस्थिति विषम होती गई। १९३० में सब जेल भी चले गये।

उन्हीं दिनों गान्धीजी ने राजनैतिक क्षेत्र से कुछ अलग होकर देश में दौरा किया। खादी का प्रचार करते हुए उन्होंने देश की हालत देखी। उन्होंने "दरिद्र नारायण" के लिए चन्दे वसूल किये। जवाहर को, गान्धीजी में, जो बातें बिल्कुल न जंची थीं उनमें "दरिद्र नारायण" की यह आराधना भी थी।

एक ओर जब देश में राजनैतिक परिस्थिति बिगड़ रही थी, गान्धीजी का मामूली खादी के प्रचार का आन्दोलन, जवाहर को खास जंचा नहीं। दारिद्रय की आराधना भी उन्हें बुरी लगती थी। दारिद्रय को क्यों सहा जाये? उस व्यवस्था को क्यों न बदला जाये, जिससे यह दारिद्रय पनपता है? जिनमें बदलने का साहस नहीं होता वे ही उसकी आराधना करते हैं। वे कल्पना भी नहीं कर

सकते कि सब के लिए आवश्यक वस्तुओं की उत्पत्ति सम्भव है। जब कभी जवाहर ने गान्धीजी से इसका जिक्र किया, तो उन्होंने कहा कि रईसों को गरीबों के "ट्रस्टी" की तरह रहना चाहिए। जवाहर को विश्वास न था कि यह सामाजिक समस्या इस प्रकार हल हो सकेगी।

इस बीच शासन सभायें भी ठप्प पड़ गई थीं। उनके कोई वास्तविक अधिकार न थे। अगर कोई बात वे न समर्थित करते तो, सरकार उनके लिए आर्डिनेन्स पास करके वह कर लेती।

इस तरह ठप्प पड़े हुए शासन सभाओं में भगतसिंह और दत्त ने दर्शकों की गेलरी से बम्ब फेंककर चेतना पैदा की। उस बम्ब से किसी की हानि न हुई, वह हानि करने के लिए फेंके भी न गये थे।

इस बम्ब से क्रान्तिकारी आन्दोलन देश में चल पड़ा। जिस अंग्रेज़ अफ़सर ने लाला लाजपतराय को पीटा था, उसे गोली से मार दिया गया। बन्गाल और और प्रान्तों में इस आन्दोलन ने जोर पकड़ा। सरकार ने बड़ी संख्या में बिना अपराध सिद्ध किये लोगों को जेल में डाल दिया।

कई कैदियों ने भूख हड़ताल शुरु कर दी।

जब ये हड़ताल हो रहे थे उस समय जवाहरलालजी को लाहौर में एक महीने रहने का मौका मिला। सरकार की अनुमति पर उन्होंने भगतसिंह और जतीन्द्रनाथ दास को देखा। जवाहर को भगतसिंह शान्त स्वभाव का, बुद्धिमान आकर्षक व्यक्ति लगा। जतीन्द्रनाथ दास ६१ रोज की हड़ताल के बाद दिवंगत हो गये। उनकी मृत्यु के कारण जेल के कानूनों में कुछ तब्दीलियाँ हुईं।

१९२९ में लाहौर में होनेवाले कान्ग्रेस के अधिवेषन के लिए राष्ट्रीय समितियों ने गान्धी जी को अध्यक्ष चुना। शीघ्र ही नये आन्दोलन के आरम्भ होने की सम्भावना थी, वे ही उसका नेतृत्व करते, इसलिए अच्छा था कि वे कान्ग्रेस का भी नेतृत्व करें। परन्तु गान्धीजी ने वह पद लेना अस्वीकार किया और कहा कि वह जवाहरलाल नेहरूजी को दिया जाना चाहिए।

पाताल दुर्ग

[५]

[कुम्भीर नाम का राक्षस राजकुमारी कान्तिसेना को उठाकर ले जा रहा था, वह कालशम्बर नामक मान्त्रिक द्वारा घायल कर दिया गया। पेड़ों पर से धूमक और सोमक ने यह सब देखा। यकायक कहीं से कोई बाण आकर शम्बर को लगा। तुरत राक्षस और वह गुफ़ाओं में भाग गये। बाद में—]

धूमक और सोमक ने कुछ कदम्ब सैनिकों को "वह देखो, राक्षस, वह देखो" चिल्लाते हुए गुफ़ाओं की ओर भागते हुए देखा। ताकि वे उनको दिखाई न पड़ जायें वे और घने झुरमुट के पीछे छुप गये।

"राक्षस कहाँ है? उसे घेर लो। उसे भाग निकलने न दो।" एक घुड़सवार यह चिल्लाता तलवार घुमाता सैनिकों के बीच में आया। वह कदम्ब का राजा उग्रसेन था। उसे देखकर, सोमक दान्त पीसते हुए उस पर बाण छोड़ने ही वाला था कि धूमक ने उसे रोका और उसके कान में कुछ कहा। इतने में चार पांच कदम्ब सैनिक उग्रसेन के पास भागे भागे आये। उन्होंने कहा—"महाराज, हमने

राक्षस को घायल कर दिया है। यह देखिये ज़मीन पर खून के निशान। परन्तु अन्धेरे में वह किसी गुफ़ा में भाग गया है।"

उग्रसेन ने सैनिकों की एक मशाल ली और गुफ़ा के सामने हरी घास पर पड़े खून के निशान उसकी रोशनी में देखे। वे निशान एक जगह ही नहीं, कई जगह पड़े हुए थे।

"सेनापति, इस खून को देखकर ऐसा मालूम होता है, जैसे यहाँ कोई छोटा-मोटा युद्ध हुआ हो। हमने इसी जगह ही तो दिन में मन्त्री के लड़के का पीछा किया था।" उग्रसेन ने कहा।

राजा की बात पर सेनापति ने कांपते हुए कहा—"हाँ, महाराज! कुन्तल मन्त्री के लड़के और उसके साथियों को मारनेवाले धूमक और सोमक को, हमारे सीमा के सिपाहियों ने यहीं पकड़ा था। उन हत्यारों को, हमारे दूत उस देश के राजा के पास ले गये थे। वे दूत अभी तक वापिस नहीं आये हैं। हमें नहीं मालूम, वहाँ के राजा और मन्त्री ने कहाँ तक हमारी बातों पर विश्वास किया है।"

उग्रसेन ने गुस्से में कहा—"कुछ भी हो, अगर यह राक्षस की आफ़त सिर पर न आ पड़ती, तो कुन्तल देश को, एक सप्ताह में मटियामेट कर देता।"

सेनापति कुछ कहना ही चाहता था कि पास के नाले से कल कल ध्वनि सुनाई दी। उग्रसेन ने तलवार उठाकर कहा—"राक्षस यहीं नाला पार करके कुन्तल देश में तो नहीं पहुँच गया है। देखो, इन सब गुफ़ाओं में देखो।" उसने सैनिकों को आज्ञा दी। जब कुछ सैनिक नाले की ओर भागे, तो उस तरफ़ से कुन्तल के

घुड़सवार ज़ोर से चिल्लाते आये और उन्होंने कदम्ब के सैनिकों पर हमला किया।

"यह ठीक नहीं है। यह गलत युद्ध है। जानते हो मैं कौन हूँ। मैं उग्रसेन् महाराज हूँ।" उग्रसेन सिंह की तरह गरजा।

"इतने बड़े महाराजा का, इस जंगल में क्या काम है? जो कोई भी बिना अनुमति के कुन्तल देश में प्रवेश करता है, वह हमारा शत्रु है। बिना बगावत किये हथियार रख दो, नहीं तो, जान नहीं बचेगी।" कहता हुआ कुन्तल देश के सैनिकों का सरदार घोड़े पर से उतरा।

कदम्ब के सैनिक अपने राजा के सामने भाले सीधे करके खड़े हो गये। उनमें से कुछ साहसी तलवार लेकर आगे बढ़े और कुन्तल के सैनिकों का मुकाबला करने लगे। उग्रसेन, अपने सैनिकों को सावधान करके कुछ पीछे हटा। एक पत्थर पर खड़े होकर ध्यान से देखने लगा कि शत्रु और अधिक तो नहीं हैं।

कुन्तल और कदम्ब के सैनिकों के बीच भयंकर युद्ध होने लगा। कदम्ब सैनिक इस कोशिश में थे कि कुन्तल सैनिक नाला पार कर आयें और कुन्तल सैनिक उनको और उनके राजा को पकड़ लेना चाहते थे। इतने में पूर्व दिशा में उजाला होने लगा। झुरमुट के पीछे छुपे हुए धूमक और सोमक को कुछ दूरी पर युद्ध करते दोनों तरफ़ के सैनिक साफ़ साफ़ दिखाई देने लगे।

"सोम्, यही अच्छा मौका है। क्या उस पापी उग्रसेन को तुम यमलोक पहुँचाओगे? या मैं उसे पहुँचाऊँ?" धूमक ने पूछा।

धूमक ने अभी अपना वाक्य पूरा न किया था कि सोमक ने धनुष पर बाण

चढ़ाया। "गले का निशाना लगाओ।" धूमक ने कहा।

सोमक ने उग्रसेन के गले का निशाना लगाकर छोड़ा। पर उसी समय नाले के पार बड़ा शोर हुआ और उग्रसेन यह देखने के लिए वह क्यों था, पत्थर से कूदा। सोमक का बाण निशाने पर न लगकर, हाथ पर जोर से लगा। उग्रसेन जोर से चिल्लाया और नीचे गिर गया और उसके सैनिक यह सोच कि उनके राजा पर कोई आपत्ति आ पड़ी थी, तुरत पीछे हटे। यही मौका देख, कुन्तल के सैनिक भालों से उनकी पीठों पर हमला करने लगे, इतने में नाले की ओर से गम्भीर स्वर में किसी का कहना सुनाई दिया। "भागते हुए शत्रु को मारो मत। घेर कर पकड़ लो।"

कुन्तल के सैनिकों ने पीछे मुड़कर देखा। उन्हें मन्त्री गंगाधर, कुछ घुड़सवारों के साथ उस तरफ़ आता हुआ दिखाई दिया। जय जयकार हुआ। कदम्ब सैनिकों को घेर लिया गया और उनके हथियार ले लिए गये। राजा उग्रसेन दर्द के कारण जमीन पर पड़ा पड़ा कराहने लगा। गंगाधर घोड़े पर से उतरा। सैनिकों ने उसको जाने के लिए रास्ता दिया। उग्रसेन के पास आकर उसने पूछा—"कौन है यह? ओहो, तो आप उग्रसेन महाराज हैं, आश्चर्य होता है, जिनको दरबार में राजसिंहासन पर बैठना चाहिए था क्यों यहां जंगल में यूँ लुढ़क रहे हैं?"

गंगाधर की बातें सुनते ही, उग्रसेन ने उठकर बैठना चाहा, पर दर्द के कारण कराहने लगा। दो कुन्तल सैनिकों ने आकर उसे उठाया और हाथ पकड़कर उसे खड़ा किया। सोमक का बाण अभी

CHITRA

उसके हाथ में लगा हुआ था। गंगाधर ने वह बाण दिखाते हुए कहा—"महाराज, आप इतने से बाण पर इतना कराह रहे हैं। हमारे भद्र की पीठ पर इससे कहीं जबर्दस्त बाण लगा था और वह उसकी बिना परवाह किये, तीस कोस सफर करके राजधानी पहुँच गया था। जब राजवैद्य उसका बाण निकाल रहे थे, तो वह हँसता हँसता इस प्रान्त की खबरें सुना रहा था।"

भद्र का नाम और उसके पीठ पर लगे बाण के बारे में ज्योंहि उग्रसेन ने सुना, तो वह पगलाया हुआ-सा चारों ओर देखने लगा। वह तब डरने लगा कि कहीं गंगाधर अपने लड़के की मौत के बदले में तलवार से उसे न मार दे। परन्तु गंगाधर मुस्कराता मुस्कराता, धीमे धीमे एक एक कदम रखता उसके सामने आया और उन सैनिकों को, जो उग्रसेन को पकड़े हुए थे उसे एक पत्थर पर बिठाने के लिए कहा—"महाराज! इस पुत्रशोक में भी मैं आपको कोई नुक्सान पहुँचाने के लिए यहाँ नहीं आया हूँ। जब तक मुझे शशिकान्त का शव नहीं दिखाई देता, तब तक मुझे विश्वास न होगा कि वह मर गया है। उसी प्रकार मेरा विश्वास है कि जयन्त जिन्दा है। आपके किये हुए धोखे का वे ही कभी न कभी बदला लेंगे।"

उग्रसेन ने लम्बा-सा मुँह करके गंगाधर की ओर देखा "महामन्त्री, न मालूम कल सवेरे उठकर किस मनहूस का मुँह देखा था, तब से कष्ट ही कष्ट झेल रहा हूँ। यहाँ शिकार पर आकर मैंने बड़ा घोर क्रूर काम किया, रात को मेरी लड़की...."

उग्रसेन कहता कहता रुका। मन्त्री गंगाधर ने उग्रसेन जिस पत्थर पर बैठा था, उसकी ओर एक कदम रखा। वह ज़रा झुका और वहाँ पड़े एक वस्तु को हाथ में लेकर उसे ध्यान से देखते हुए कहा—"यह क्या है? यह तो किसी राक्षस का सींग है। खून अभी तक सूखा नहीं है। मैंने कभी न सुना था कि यहाँ गुफ़ाओं में राक्षस रहते हैं।"

उग्रसेन ने गंगाधर के हाथ का सींग देखते हुए कहा—"महामन्त्री, वह राक्षस ही कल मेरे किले से मेरी लड़की को उठाकर ले गया था। उसका पीछा करते ही मैं यहाँ आया हूँ। मेरी अभी तक उससे भिड़न्त नहीं हुई है। किसने उसका सींग तोड़ा होगा?" उसे अचरज हो रहा था।

उग्रसेन की लड़की, कान्तिसेना के अपहरण के बारे में गंगाधर ने तब तक कुछ न सुना था। यह सुनते ही उसे उग्रसेन पर दया आने लगी। उसने, साथ आये हुए वैद्य को बुलाकर, उसे उग्रसेन के हाथ में लगे हुए बाण को दिखाया। "जैसे भी हो, महाराजा को बिना दर्द दिये उस बाण को बाहर निकालो।" फिर उसने उग्रसेन से कहा—"महाराज, इस आशा से मेरा लड़का यहीं कहीं मिल सकता है मैं राजवैद्य के शिष्य को साथ लेकर आया हूँ।"

युवक वैद्य ने मिनटों में राजा का बाण बाहर निकाला और उसके पट्टी बाँध दी। गंगाधर उस बाण को देखकर कुछ कहने ही वाला था कि पास में खड़े सेनापति ने उसके कान में कुछ कहा। गंगाधर ने और चकित होते हुए कहा—"महाराज, जिसने आपको घायल किया है और

जिसने राक्षस का सींग तोड़ गिराया है, वह एक ही है। उन सोमक और धूमक को, जिनको आप लोगों ने आपने पितृ-मातृ हन्तक कहा था, हमारे सीमा के सरदार ने पकड़ लिया था और उसने आपके दूतों से लिये हुए उन्हें बाण दे दिये थे। उसी बाण से आप घायल हुए हैं। यह देखिये। आपके राजा के चिन्ह हैं।" उसने उग्रसेन को बाण दिखाई दिया।

"महामन्त्री! मैं नहीं जानता कि वे दोनों हत्यारे हैं कि नहीं, परन्तु बगावती अवश्य हैं। वे यहीं कहीं छुपे हुए होंगे।" कहते हुए उग्रसेन अपने सैनिकों की ओर मुड़ा और उसने कहा—"उन विद्रोहियों को पकड़ो।"

गंगाधर ने सैनिकों को ठहरने के लिए कहा—"महाराज, यहाँ आज्ञा देनेवाला मैं हूँ। आप नहीं हैं। जब तक मेरे लड़के शशिकान्त के बारे में मुझे नहीं मालूम होता, तब तक आप सब लोग शतभानु महाराज के कैदी हैं।" फिर उसने कुन्तल के सेनापति से कहा—"हमारे सैनिकों से इस सारे ईलाके की गुफाओं में धूमक और सोमक की खोज करवाओ। हमारे सैनिक यह चिल्लाते जायें कि उनको कोई डर नहीं है, शतभानु महाराज उनका कुछ नहीं बिगाड़ेंगे। यह सुनकर, वे बाहर आ सकते हैं।"

तुरत धूमक और सोमक ने पेड़ की टहनियों पर खड़े होकर कहा—"शतभानु महाराज की जय।" एक टहनी से दूसरी टहनी पर बन्दरों की तरह कूदते, वे ज़मीन पर कूदे।

(अभी है)

क्रुद्ध मुनि का शिष्य

विक्रमार्क ने अपना हठ न छोड़ा। वह पेड़ के पास गया। पेड़ पर से शव उतारकर, हमेशा की तरह चुपचाप श्मशान की ओर चलने लगा। तब शव में स्थित बेताल ने कहा—"राजा, तुम्हें इस प्रकार कष्ट उठाते देख दया आती है, पर कभी कभी ऐसा भी लगता है, जैसे यह तेरे भले के लिए ही हो। कई यह नहीं जान पाते कि किससे उनका भला होगा और किससे बुरा। इसके दृष्टान्त के रूप में तुम्हें ब्रह्मराक्षस चैत्रिक की कहानी सुनाता हूँ। तुम्हें थकान न मालूम होगी, सुनो।" उसने यूँ कहानी सुनानी शुरु की।

शिलावर्त नाम के देश का शृंगभुज नाम का राजा पालन किया करता था। एक दिन उस राजा के पास एक यात्री

वेताल कथाएँ

हुआ। उस पर फूल आया, पर इससे पहिले कि वह बढ़कर फल बन सका, किसी ने उसको तोड़ा और उसको मचल मुचलकर नीचे फेंक दिया।

तीन महीने बाद, उस पेड़ पर एक और फूल आया। पहरेदारों को जो रात दिन पेड़ का पहरा दे रहे थे, एक दिन एक विचित्र दृश्य दिखाई दिया। रात को उनको टहनियों के हिलने हिलाने की ध्वनि सुनाई दी। पेड़ पर उन्हें एक भयंकर आकृति दिखाई दी। उनके चिल्लाने पर कुछ सैनिक भागे भागे आये। उन्होंने पेड़ पर बैठी "आकृति" पर बाण छोड़े, भाले फेंके। पर वे अस्त्र, उस आकृति का कुछ न बिगाड़ सके। उसने पेड़ का फल तोड़ा और उसे ज़मीन पर दे मारा।

इस घटना के बारे में राजा को मालूम हुआ। राज-पुरोहित आदि ने यह बात सुनकर कहा—"इस पेड़ पर शायद कोई ब्रह्मराक्षस है।" अगर वह ब्रह्मराक्षस भी है, तो क्यों उस पेड़ के फलों को बिगाड़ रहा है, यह कोई न जान सका। यही नहीं वह और पेड़ों के पास तक न जाता था। बाकी समय में किसी को

आया और एक बड़े बीज को उसने राजा को उपहार में दिया। "महाराज! जब मैं समुद्र में यात्रा कर रहा था, तो यह बीज आकाश में से मेरे ज़हाज में गिरा। इसकी सुगन्ध से ऐसा लगा, जैसे यह स्वर्ग लोक के किसी पेड़ का बीज हो। आप ही इसके फल का आनन्द लेने के योग्य हैं, यह सोचकर मैं इसे आपको दे रहा हूँ।"

राजा ने वह बीज अपने बाग में लगवाया। कुछ समय बाद, उसमें से पौधा निकला। धीमे धीमे वह पेड़ बड़ा

दिखाई भी न देता था। जब पेड़ पर फल लगता है तभी वह दिखाई देता है।"

राजा ने उस ब्रह्मराक्षस को भगाने के लिए कुछ मांत्रिकों को भी नियुक्त किया। उन्होंने राजा को वचन दिया कि वे पेड़ पर कुछ तावीज बाँधेगे, पेड़ के नीचे कुछ मन्त्र रखेंगे, और ब्रह्मराक्षस को पेड़ पर नहीं आने देंगे।

पर जब वे पेड़ के पास जा रहे थे, तो अदृश्य होकर किसी ने उनको खूब मारा पीटा। इससे यह साफ़ हो गया कि ब्रह्मराक्षस अदृश्य मात्र था, पर वह पेड़ छोड़कर न गया था। मान्त्रिकों ने मन्त्रोच्चारण किया। पर कोई फ़ायदा नहीं हुआ। उसके बाद मालियों ने भी उस पेड़ के पास आना जाना छोड़ दिया। उसके चारों ओर मेंद बना दी और कोई उसके पास न जाता।

इसके बाद भी, पेड़ पर हर तीसरे महीने एक फल लगता और ब्रह्मराक्षस उसे तोड़कर फेंक देता। कुछ समय बाद एक और विचित्र घटना हुई।

इस पेड़ के समीप एक रास्ता था, जिस पर लोग आया जाया करते थे।

एक दिन एक आश्रमवासी ब्रह्मचारी उस पर से जा रहा था कि उसे एक ब्रह्मराक्षस दिखाई दिया। उसने उससे पूछा—"तुम क्रुद्ध मुनि के शिष्य हो न?"

ब्रह्मराक्षस को देखकर वह ब्रह्मचारी भय से काँपने लगा। उसने कहा—"नहीं तो...."

"तो जाओ...." यह कहकर ब्रह्मराक्षस अदृश्य हो गया।

अगर कोई मुनि के शिष्य जैसा आदमी उस तरफ़ से गुज़रता, तो ब्रह्मराक्षस उसके सामने प्रत्यक्ष होता और पूछता—"तुम क्रुद्ध मुनि के शिष्य हो?" वह न कहता और ब्रह्मराक्षस अदृश्य हो जाता, इस प्रकार कई बार हुआ। ब्रह्मराक्षस के डर से लोगों ने उस तरफ़ जाना ही छोड़ दिया।

ब्रह्मराक्षस के कारण राजा बड़ा चिन्तित रहने लगा। पेड़ को कटवा देने से ब्रह्मराक्षस से शायद पिंड छुड़वाया जा सकता था, पर उसके डर से कोई पेड़ को काटने के लिए तैयार न था। इसलिए राजा ने एक और उपाय सोचा।

राजा के एक बड़ी सुन्दर लड़की थी। वह शादी के लायक बड़ी हो गई थी। कई राजकुमार उससे शादी करने के लिए खबर भेज रहे थे। यदि यह घोषित किया गया कि वह उसके साथ ही अपनी लड़की का विवाह करेगा जो ब्रह्मराक्षस को भगा देगा तो इस तरह ब्रह्मराक्षस से पीछा छुट जायेगा और एक अक़्लमन्द दामाद भी मिल जायेगा। और लड़की की शादी अगर यूँहि कर दी गई, तो कई नाराज़ भी हो जायेंगे, इस तरह इस समस्या का भी हल हो जायेगा। यह सोच राजा ने देश देशान्तर में घोषणा करवाई कि जो कोई उसके बाग के देवता वृक्ष के ब्रह्मराक्षस

को भगा देगा, उसके साथ अपनी लड़की कनकमंजरी का विवाह करवायेगा।

यह घोषणा सुनते ही, जो जो कनकमंजरी से विवाह करने के लिए उत्सुक हो रहे थे, वे सब यकायक ठंडे पड़ गये। परन्तु केवल वज्रभुज ने वह सब जानकारी ज़मा की, जो लोग ब्रह्मराक्षस के बारे में जानते थे। काफ़ी सोचने साचने के बाद निश्चय किया कि वह ब्रह्मराक्षस को भगाने का प्रयत्न करेगा।

वज्रभुज कैवर्त देश का युवराज था। वह बड़ा अक़्लमन्द था और कई विद्याओं में पारंगत था। वह आश्रमवासी, ब्रह्मचारी का वेष धारण करके निर्जन रास्ते से शिलावर्त राजधानी के पास आया।

जैसा कि उसने अनुमान किया था, ज्योंहि, वह राजोद्यान के पास आया, त्योंहि ब्रह्मराक्षस उसके सामने प्रत्यक्ष हुआ। उसने पूछा—"तुम क्रुद्ध मुनि के शिष्य हो?"

"हाँ....मैं क्रुद्ध मुनि का शिष्य हूँ। तुम्हें मुझ से क्या काम है?" वज्रभुज ने ब्रह्मराक्षस से पूछा।

ब्रह्मराक्षस ने उसके पैरों पर पड़कर कहा "तो, मेरी शाप विमुक्ति का उपाय बताओ।"

"उठो....उठो, मैं ही तुम्हारी शाप विमुक्ति का प्रयत्न करूँगा। परन्तु, पहिले अपनी सारी बात पूरी तरह सुनाओ। फिर गुरु के अनुग्रह पर, शाप विमुक्ति का उपाय मैं बताऊँगा।" राजकुमार ने कहा।

तब ब्रह्मराक्षस ने अपनी कहानी यूँ सुनायी :—

"हिमालय के एक देश का मैं राजकुमार हूं। मेरा नाम चैत्र है। हमारे देश के पास ही क्रुद्ध महामुनि का आश्रम था। उस आश्रम में एक अपूर्व वृक्ष था। उस पर तीन महीने में एक बार फल लगा करता था। उस फल को, जैसे भी हो, तोड़कर खाने की मेरी मरज़ी हुई। एक बार चोरी चोरी मैं आश्रम पहुँच गया और पेड़ पर लगे फल को तोड़कर मैं खा गया। उसी समय क्रुद्ध महामुनि उस तरफ़ आये और उन्होंने मुझे ब्रह्मराक्षस होने का शाप दिया। मेरा सौन्दर्य जाता रहा और मैं ब्रह्मराक्षस बन गया। अपना दुख काबू में न रख सका। मैंने उस महामुनि के पैरों पर पड़कर प्रार्थना की कि वे मुझे शाप विमुक्त कर दें। उन्होंने उपाय तो बताया ही नहीं ऊपर से यह भी कहा मेरे खाये हुए फल के बीज से एक और पेड़ पैदा होगा। उस पर फल लगेगा और अगर किसी ने वह फल खाया तो मैं भस्म हो जाऊँगा। मैं गिड़गिड़ाया कि मुझे शाप विमुक्ति का मार्ग बताएँ। तब उन्होंने कहा "मैं ही क्रुद्ध महामुनि का शिष्य हूँ...." यह जो कोई कहेगा, वह ही तुम्हें शाप विमुक्त करेगा। जाओ। मैंने कई से पूछा, पर किसी एक ने न कहा

कि मैं क्रुद्ध महामुनि का शिष्य हूँ। इतने समय में एक तुम ही आये, जिसने यह कहा। मेरा शाप छुड़ाओ।"

सब सुनकर राजकुमार ने पूछा---"जब क्रुद्ध महामुनि के शिष्य के तलाश में हो, तो तुम हिमालय में न रहकर इतनी दूर क्यों चले आये?"

"मुनि ने जैसे ही कहा कि मेरे खाये हुए फल के बीज से एक पेड़ उगेगा, उस पर फल लगेगा और उस फल को अगर कोई खायेगा, तो मै भस्म हो जाऊंगा....मैं डर गया और मैंने अपने हाथ में रखे बीज को दूर समुद्र में फेंक दिया, पर मेरा कुछ ऐसा दुर्भाग्य कि वह बीज न मालूम कैसे यहाँ पेड़ हो गया और अब उस पर फल भी लग रहे हैं। यह मुझे ज्योंहि मालूम हुआ, मैं यहाँ चला आया। पेड़ पर रहने लगा और जब कभी फल लगता है, मैं उसे तोड़कर फेंक देता हूँ। यदि तुम्हारे प्रयत्न से मैं शाप विमुक्त हो गया, तो मैं अपने देश वापिस चला जाऊँगा। मुझे छुड़ाने का कोई उपाय सोचो।" ब्रह्मराक्षस ने कहा।

राजकुमार ने हँसकर कहा—"अरे जो तुम्हें गुरु ने बताया था, वह तुम्हें, समझ में नहीं आया।" चूँकि तब तुम ब्रह्मराक्षस बन चुके थे। इसलिये उनके बताये हुये शाप विमोचन के मार्ग को, तुमने दूसरा शाप समझा। उसे तुम्हें समझाने का काम गुरु ने मुझे बताया है। उनका यह भी ख्याल रहा होगा कि तुम्हें कुछ समय तक ब्रह्मराक्षस बनकर रहना ही चाहिये। तुम्हारे खाये हुये फल के बीज से जो पेड़ पैदा होगा और उसके फल अगर कोई खायेगा तो वह भस्म हो जायेगा और तुम शाप विमुक्त हो जाओगे, यह उनका मतलब था। इसलिये उसके फल तोड़ने से तुम्हारा ही नुक्सान हो रहा है। पेड़ पर फल को पकने दो। कोई उसे खाकर भस्म हो जायेगा। परन्तु तुम शाप से छूट जाओगे।"

यह सुनकर ब्रह्मराक्षस बड़ा खुश हुआ। वह राजकुमार के प्रति कृतज्ञता दिखाकर अदृश्य हो गया। बज्रभुज, अपना साधारण वेष धारण करके शृंगभुज महाराज के पास गया। उसने उससे कहा—"मैं आपके उद्यान के ब्रह्मराक्षस को भगाकर आ रहा हूँ। इस बार जो पेड़ पर फल लगे, उसे पकने पर खाइये और अपनी लड़की का विवाह मुझ से कीजिये।" फिर उसने जो कुछ हुआ था, वह कह सुनाया।

जल्दी ही उस वृक्ष पर फल लगा। वह पका। राजा ने उस फल को तुड़वाया उसका एक टुकड़ा उसने खा लिया। उसी समय पेड़ पर आग उठी और बुझ गई। ढेर-सी राख नीचे गिर गई। जैसा कि क्रुद्ध महामुनि ने कहा था ब्रह्मराक्षस, जो शाप विमुक्ति की प्रतीक्षा में बैठा था, जलकर खाक हो गया।

इसके बाद श्रृंगबाहु महाराज ने, अपनी लड़की का वज्रभुज के साथ, वैभवपूर्वक विवाह कर दिया।

बेताल ने यह कहानी सुना कर कहा— "राजा! क्रुद्ध महामुनि ने ब्रह्मराक्षस को शाप विमुक्ति का उपाय क्यों नहीं बताया था? क्यों, निष्कारण उसने शाप पर शाप दिये थे? वज्रभुज ने क्यों झूट बोला कि वह क्रुद्ध महा मुनि का शिष्य था? यही नहीं, उससे क्यों क्रुद्ध महामुनि के शब्दों का घुमा फिरा कर उल्टा सीधा अर्थ बताया? उसका उसको नाश कर देना अन्यायपूर्ण था न?

यदि इन प्रश्नों का तुमने जान बूझकर उत्तर न दिया, तो तुम्हारे सिर के टुकड़े टुकड़े हो जाएँगे।

इस पर विक्रमार्क ने कहा—"क्रुद्ध महामुनि ने शाप पर शाप नहीं दिया था? ब्रह्मराक्षस की शाप विमुक्ति राख हो जाने में ही थी। इस बात का वज्रभुज ने ठीक तरह ही अनुमान किया था। उसने ब्रह्मराक्षस की विमुक्ति के लिए ठीक ही उपाय बताया था। परन्तु यदि वह झूट न बोलता तो ब्रह्मराक्षस शाप विमुक्ति के लिए नहीं मानता। "मैं क्रुद्धमहामुनि का शिष्य हूँ।" यह कहकर उसने क्रुद्ध महामुनि की बात को झूटा नहीं साबित किया। उस मुनि ने यह न कहा था कि उसका शिष्य ही उसे शाप से छुड़ायेगा।—"जो यह कहेगा कि मैं क्रुद्धमहामुनि का शिष्य हूँ, वह यह काम करेगा।" वज्रभुज ने यह कहा और उसने वह काम करके भी दिखाया।

राजा का इस प्रकार मौन भंग होते ही, बेताल शव के साथ अदृश्य हो गया और पेड़ पर जा बैठा। (कल्पित)

नृत्य प्रदर्शन

जल्दी ही यह खबर फैल गई कि दम्भराम ने नकली गहने गिरवी रखकर तीन हज़ार रुपये उधार लिये थे। इससे दम्भ की हैसियत यकायक ढह गई।

इसके कुछ दिन बाद, मालूम हुआ कि यात्रा पर जाते जाते, उस देश का राजा वहाँ ठहरने वाला था। आस-पास के गाँवों के मुखियों ने मिलकर निश्चय किया कि राजा की आवभगत, विनोद और सहभोज के लिए प्रबन्ध किया जाये।

उन गाँवों के नट, गायक, नर्तक साजवालों ने निश्चय किया, कि अपनी अपनी कला का प्रदर्शन करके वे राजा से ईनाम पायेंगे और उस ईनाम से कला की वृद्धि के लिए साधन और स्थल प्राप्त करेंगे। तब उनके पास आवश्यक वस्त्र आभरण वगैरह भी न थे। उनको प्रत्येक वस्तु उधार लेनी पड़ी और सब चीजें तो मिल गईं, पर नर्तकी के लिए आवश्यक आभरण नहीं मिले।

यह बात सुनते ही, पन्नालाल के गाँव के मुखिया को, पन्नालाल के पास रखे गये नकली गहने याद हो आये। उसने कलाकार से कहा—"हमारे गाँव के पन्नालाल के पास नकली गहने हैं। वे भरत नाट्य में काम आ सकेंगे। तुम उन्हें उसके पास से ले लो, और राजा जो ईनाम दें, उसका तीसरा हिस्सा उसको दे दो। इस बारे में पन्नालाल से पहिले कुछ न कहना। उसे ऐसी बातें पसन्द नहीं हैं।"

कलाकार, ग्रामाधिकारी को साथ लेकर पन्नालाल के घर गये। उन्होंने उससे

नकली गहने उधार मांगे। पन्नालाल ने कहा—"मेरे पास नकली गहने हैं ही नहीं।"

"अरे, यह क्या कहते हो? उस दम्भराम ने तेरे पास नकली गहने ही तो गिरवी रखवाये थे।" ग्राम के मुखिया ने कहा।

"वे तो दम्भराम के ही हैं। यही नहीं उस पेटी की चाबी मेरे पास नहीं है। अगर आप गहने ही चाहते हैं, तो अच्छे गहने ही दूंगा, ले लीजिये।" पन्नालाल ने कहा।

"अगर अच्छे गहने ही चाहिये होते तो क्या हम तुम्हारे पास आते? नृत्य के लिए नकली गहने ही चाहिये। वे हमें नहीं मिले, इसलिये ही हम तुम्हारे पास आये हैं।" ग्रामाधिकारी ने कहा। उसने दम्भराम के घर आदमी भेजा। उसे ताली लेकर बुलाया। दम्भराम ने आकर बिना कुछ कहे, ताला खोलकर, नकली गहने नर्तकी को दे दिये।

राजा उस प्रान्त में आये। गाँववालों ने उसका अच्छी तरह सत्कार किया। विनोद और सहभोज की व्यवस्था की

गई। राजा ने कला प्रदर्शन की बड़ी प्रशंसा की। भरत नाट्यं उसको विशेषतः पसन्द आया। सब कलाकारों को ईनाम दिया गया। पर नर्तकी को राजा ने दस हज़ार रुपये दिये। नर्तकी ग्रामाधिकारी को साथ लेकर पन्नालाल के घर आयी। "ये लीजिए आपके गहने और यह लीजिए ईनाम का तीसरा भाग" कहकर उसने पन्नालाल को पहिले नकली गहने और तीन हज़ार तीन सौ रुपये नकद दिये।

पन्नालाल को वह धन देख अचरज हुआ। "यह पैसा क्या है?"

हमने पहिले ही निश्चित कर लिया था कि ईनाम का तीसरा भाग गहने उधार देनेवाले को दे दिया जायेगा। इसका तीसरा भाग तुम्हारा ही है।" ग्रामाधिकारी ने कहा।

"नकली गहने दम्भराम के हैं, यह रुपया उसे ही मिलना चाहिए।" पन्नालाल ने नकली गहने पेटी में रखते हुए कहा।

ग्रामाधिकारी ने उस धन को ले जाकर दम्भराम के सामने रखते हुए कहा—"क्योंकि नकली गहने तुम्हारे हैं, इसलिए पन्नालाल कह रहा है कि यह पैसा भी तुम्हें मिलना चाहिए।"

दम्भराम ने ग्रामाधिकारी से कहा—"अच्छा तो आपको मेरे साथ पन्नालाल के घर आना होगा।" वह उस धन को लेकर पन्नालाल के घर आया। उसने पन्नालाल से कहा—"पन्नालाल, यह लो अपना रुपया। यह लेकर मेरे नकली गहने मुझे वापिस कर दो। तुम्हारे कारण ही नकली गहनों के दाम भी असली गहने जितने हो गये हैं। मैंने अच्छा सबक भी सीख लिया है। कम से कम मुझे इस तरह तो अपने ऋण से मुक्त करो।"

"अच्छा, तुम अपने गहने ले लो।" पन्नालाल ने कहा।

दम्भराम के कारण जब पन्नालाल का नुक्सान हुआ था, तो गाँववालों को तो अफसोस हुआ था, पर पन्नालाल को कोई अफसोस न हुआ था। उसी तरह पैसा वापिस मिलने पर पन्नालाल ने तो कोई सन्तोष प्रकट न किया, पर गाँववाले बड़े खुश हुए।

मानव अभ्युदय

आदिकाल में, देवताओं और दानवों में घोर युद्ध हुआ करता। कभी दानव जीतते, तो कभी देवता। उन युद्धों में भले ही दानव जीतें या हारें मनुष्यों को हमेशा उनका भय बना रहता। दानवों की दुष्टता के कारण ऐसी परिस्थिति भी आ गई कि मनुष्य का सर्वनाश ही हो जाता।

मनुष्यों ने मनु महामुनि के पास जाकर कहा—"महर्षि, मनुष्यों की रक्षा का भार आप ही को वहन करना होगा।"

"मनु में दिव्य अंश था। मनुष्यों की दीन स्थिति देखकर उसको उन पर दया आयी। जो उसके आश्रम में आ गये थे, यज्ञ कर्म द्वारा उनका पोषण करते हुए मनुष्यों की दानवों से रक्षा करने के लिए उसने अलग एक अनुष्ठान प्रारम्भ किया। उस अनुष्ठान के समाप्त होते ही हवन कुण्ड से दो परातें बाहर निकलीं। मनु ने उनको देवताओं का प्रसाद समझा और आश्रम में रखकर उनकी पूजा करने लगा।

एक दिन दानव, मनुष्यों को सताकर खाने के लिए मनु के आश्रम में आये। तुरत वे दोनों परातें एक दूसरे से टकराईं और जोर से ध्वनि हुई। उस ध्वनि के कानों में पड़ने से पहले ही राक्षसों ने प्राण छोड़ दिये।

जब इस प्रकार दो तीन बार हुआ, तो दानवों को उन परातों की महिमा के बारे में मालूम हो गया। जब तक वे रहेंगी दानव मनुष्यों का कुछ नहीं बिगाड़ सकते

थे इसलिए जैसे भी हो, उन परातों को मनु के यहाँ से ले आना था।

"मनु बड़ा दानी था। हमेशा यज्ञ करता और ब्राह्मणों को दान देता। दान करते समय, जो कोई, जो कुछ माँगता वह दे देता। किसी को न न कहता। यदि किसी ने उन परातों को दान में ले लिया तो हमें उनका भय जाता रहेगा।" आयुष्मक नामक दानव ने सलाह दी।

दानवों ने शुक्राचार्य के शिष्य त्रिपुर, शंखदत्त को लालच दिया कि वे उनका मांस से संतर्पण करेंगे और उनको उन्होंने मनु से उन परातों को दान में लेने के लिए भेजा। शुक्र के शिष्य मनु के आश्रम में गये। दान लेते समय उन्होंने परातें माँगी। महादाता मनु ने न न किया और उनको वे परातें दान में दे दीं। शुक्र के शिष्यों ने उन्हें ले जाकर दानवों को दिया। दानवों ने उनके टुकड़े टुकड़े कर दिये और उनके चूरे को भूमि में गाड़ दिया।

अगले दिन ही वहाँ घास उग आई। मनु की आश्रम के एक गौ ने उस घास को खा लिया और आश्रम वापिस चली गयी।

क्योंकि परातें नहीं थीं, इसलिये मनुष्यों को खूब नोंचकर खाया जा सकता था, यह सोचकर दानवों ने मनु के आश्रम पर आक्रमण किया। उनको देख कर वह गौ खूब जोर से चिल्लायी, जिसने वह घास खाली थी। उसका चिल्लाना सुनकर दानवों के दिल फट गये। जो जो उसके पास आये। उसकी सांस से जल गये और खाक हो गये।

एक रुकावट चली गई थी। पर अब एक और बाधा आ पड़ी थी। वे फिर

शुक्र आचार्य के शिष्यों के पास गये और उसे अपनी कठिनाइयां के बारे में बताया। " तुम फिर मनु के आश्रम में जाओ और उससे पशु दान में ले आओ।" त्रिपुर शंखदूत मनु के पास गये। गौ दान में ली और उसे लाकर उन्होंने दानवों को दे दी। दानवों ने उस को मार दिया। जलाकर राख कर दिया और राख को एक तालाब में मिला दिया। फिर अपने रास्ते चले गये। मनु की पत्नी उस तालाब में स्नान करके, पानी लेकर आश्रम वापिस चली गई।

गौ क्यों कि मार दी गई थी। इसलिये राक्षसों ने सोचा कि अब उन्हें कोई डर न था। वे फिर मनु के आश्रम में गये। पर जब मनु की पत्नी ने उनकी ओर देखा, तो दानव, जो जहाँ खड़ा था वहाँ खड़ा खड़ा, राख हो गये। यह बात साफ़ हो गई कि जब तक मनु की पत्नी को आश्रम से नहीं हटाया जाता, तब तक मनुष्यों को खाना सम्भव न था।

दानव फिर शुक्र के शिष्यों के पास गये। " इस बार मनु की पत्नी को दान में स्वीकार करो। उसे मारकर, हमें

खिलाओ। जब तक यह नहीं होता, तब तक हमारी कठिनाई नहीं जायेगी।"

यह सुनकर शुक्र के शिष्य डर गये। मनु की पत्नी को दान में कैसे माँगा जाये, नर माँस दानवों को कैसे दिया जाये, अगर ये बातें वे साफ साफ कहते तो दानव उनके प्राण ले सकते थे। इसलिए वे अपने गुरु शुक्राचार्य के पास गये। जो कुछ हुआ था, उन्होंने उसे बताया और शिकायत की कि दानव वह निकृष्ट काम करने के लिए कह रहे थे।

शुक्रचार्य ने, अपने शिष्यों को पहिले किये गये दान पर डाँटा फटकारा। "धोखे के कारण, तुम्हारा सर्वनाश होगा।" उसने कहा।

तब दानव जान गये कि उनका समय पास आ गया था। पर वे मूर्ख थे। इसलिये दो दानव ब्राम्हण का वेषधारण करके मनु के आश्रम में गये और मनु जब सबको दान दे रहे थे, तो उन्होंने कहा "आप अपनी पत्नी दान में दीजिये।"

"तो ले जाओ...." कह कर मनु ने अपनी पत्नी को बुलाया। "मैं, तुम्हें, इनको दान में दे रहा हूँ।"

"इनको? कौन हैं ये?" मनु की पत्नी ने दानवों को दूर से देखा। तुरत वे दोनों दानव जलकर खाक हो गये।

उसके बाद दानवोंने मनुष्यों को नहीं सताया। मनु की पत्नी के कई बच्चे हुये। दानवों के भय के न होने के कारण मनु के वंश की वृद्धि होती गई। वे भिन्न भिन्न जगह गये और वहाँ घर बनाकर रहने लगे। चूँकि वे मनु की सन्तान थे, इसलिये उनका मानव नाम स्थिर पड़ गया।

भूत की नौंकरी

शिवपुर के जमीन्दार की शिवपुर में बड़ी हवेली थी। परन्तु वह वहाँ अधिक न रहा करता था। जमीन्दारी का काम इतना रहता था कि वह राजधानी में ही रहा करता था।

शिवपुर के हवेली की नौकर चाकर देखभाल किया करते थे। माली अपना काम किया करते, रसोई खाना बनाते। झाड़ू देनेवाले झाड़ू देते। बर्तन माँजनेवाले, बर्तन माँजते।

कोई उनको पूछने ताछनेवाला न था, इसलिए मजे में उनका वक्त कट रहा था। सब अपने काम खतम करके, इधर उधर की गप्पें लगाते। रात में भी अपने घर न जाते, जमीन्दार की हवेली में ही रहा करते।

इस तरह उनकी आराम से जिन्दगी कट रही थी, कि एक दिन उन पर गाज़ सी गिरी। एक रात को वे गप्प लगा रहे थे कि कमरे में किसी के चलने और किवाड़ों के खोलने की, और उनको बन्द करने की आवाज सुनाई दी। फिर रसोई घर में भी कुछ शोर सुनाई दिया।

यदि बन्द कमरों में शोर सुनाई देता है, तो इसका मतलब यह ही है कि भूत ही शोर कर रहे हैं। एक दो ने हिम्मत कर के पूछा भी—"कौन है वहाँ? पर कोई जवाब न आया। न शोर ही कम हुआ।

उस दिन रात को, वहाँ नौकरों की सोने की हिम्मत न हुई। उन्होंने हवेली में

राम भरोसे

ताला लगा दिया और सब अपने अपने घर चले गये। परन्तु गंगाराम नाम का लड़का हवेली में ही रह गया। किसी को भी उसका ख्याल न रहा। वह चूँकि नौकरों का नौकर था इसलिए खूब काम करके वह थक गया था, जब और गप्पें मार रहे थे, तो वह एक पलंग के नीचे आराम से सो गया था।

और नौकरों के चले जाने के थोड़ी देर बाद, रसोई घर में, कोई तश्तरी गिरी और ज़ोर से आवाज हुई और गंगाराम की नीन्द टूटी।

उसे यह जान आश्चर्य हुआ कि कोई रसोई घर में काम कर रहा था। आधी रात के समय कोई क्यों काम करेगा! यह सोच कि कहीं सवेरा तो नहीं हो गया था, वह उठा, उसने देखा कि वहाँ कोई नौकर चाकर न थे।

यह सोच कि सब रसोई घर में जमा हो गये थे उसने रसोई के दरवाजे में से झाँककर देखा तो उसे काठ मार गया। रसोई में, उसने किसी लंगूर जैसे प्राणी को काम करते देखा। उसे देख गंगाराम का डर, अचरज में बदल गया। चूँकि वह "लंगूर" एक एक बर्तन को माँजकर, धोकर, पोंछकर अलमारी में रख रहा था। गंगा, उसे देखता खड़ा रहा।

लंगूर ने बर्तन माँजने के बाद, सारा रसोई घर पानी डालकर साफ़ किया। इधर उधर पड़ी चीज़ों को उठाकर उसने ठीक ठीक रख दिया। झाड़ू और कपड़ा लेकर वह एक एक कमरे में गया और कुर्सी मेज़ों को भी पोंछता गया। गंगाराम भी छुप कर एक जगह खड़ा हो गया। उसे इतनी अच्छी तरह काम करता देख उसका अचरज बढ़ता जाता था। एक घंटे के

अन्दर उस लंगूर ने घर का सारा काम पूरा कर दिया। बन्द ड्योढ़ी में से बाहर चला गया। फिर कहीं कोई आवाज़ न हुई।

गंगा जान गया कि यह लंगूर भूत ही था। उसे डर तो खैर लगा नहीं, यह देख कि वह घर का काम इतनी अच्छी तरह कर रहा था, उसे खुशी भी हुई। वह निश्चिन्त हो, एक गद्देदार पलंग पर सो गया और सवेरे तक मजे में सोता रहा।

सवेरे आकर, नौकरों ने गंगा को उठाया। "अरे, तुम रात भर अकेले ही रहे! क्या तुम्हें भूतों का शोर नहीं सुनाई दिया! गनीमत है, कि वे तुम्हें नोच नाच कर नहीं खा गये।"

"क्या तुमने भी भूत को देखा था?" गंगाराम ने उनसे पूछा।

"हमने तो नहीं देखा, क्या तुमने देखा था?" उन्होंने गंगा से पूछा।

"हाँ, हाँ, जो कुछ सफाई वफाई वह एक घंटे तक करता रहा, मैं वह भी देखता रहा।" गंगाराम ने कहा।

"तो भूत ने नौकरी की भी?" नौकरों ने आश्चर्य से पूछा।

"उसने सारा घर का काम किया। उसने बर्तन माँजे, उनको रखा, सारा रसोई घर धोया। घर में झाड़ू दी। सारा समान साफ़ किया, अगर अब तुम कुछ काम करना भी चाहो, तो भी कोई काम नहीं है।" गंगाराम ने उनसे कहा।

"भाई गंगू वह भूत देखने में कैसा था?" नौकरों ने पूछा।

"एक बड़े लंगूर की तरह।" गंगा ने कहा।
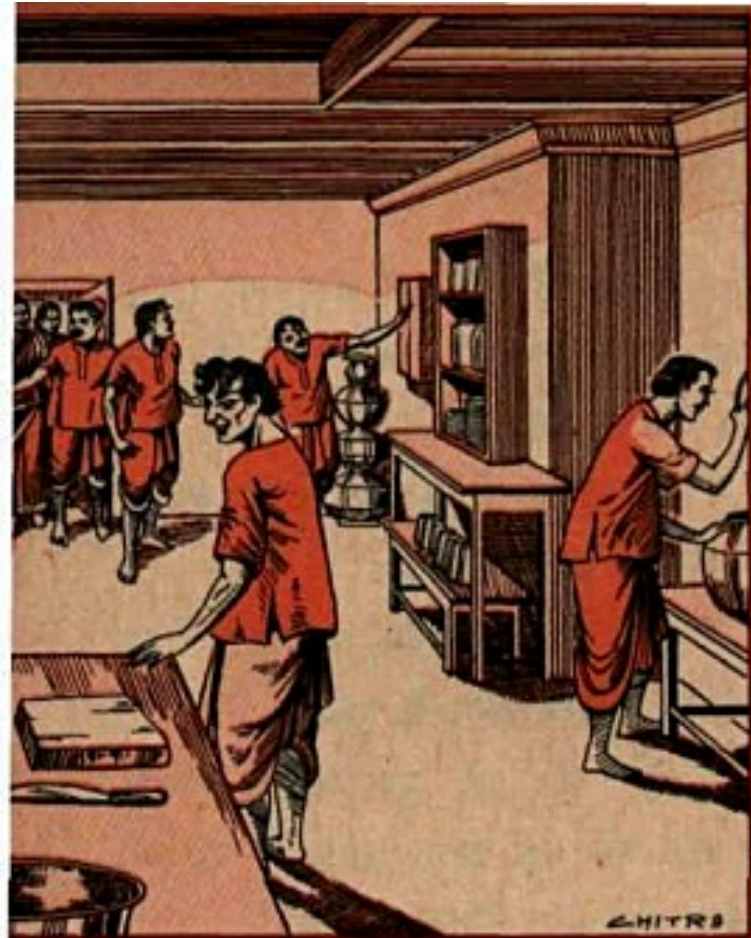
यह सुनते ही सब बड़े डरे। उन्होंने जब सारा घर देखा, तो वे जान गये कि भूत सारा काम कर गया था। सिवाय, खाना बनाने के और खाने के उनको कोई और काम न था। पर उनमें इतनी हिम्मत न थी, कि रात में वहाँ वे सोये। उन्होंने सवेरे के खाना बनाने के बर्तन वैसे ही छोड़ दिये। रात के खाने के लिये, उन्होंने अलग बर्तनों का इस्तेमाल किया। झूटे बर्तन भी उन्होंने नहीं उठाये।

रात के भोजन के बाद, जब सब जा रहे थे, तो गंगाराम को अकेले घर में रहते कुछ डर लगा। भूतों को छेड़ना छाड़ना अच्छा न था, यह सोच गंगाराम भी रात को अपने घर चला गया।

अगले दिन जब नौकर आये तो झूटी थालियाँ वगैरह साफ़ कर दी गयी थीं। पकाने के बर्तन भी माँजकर रख दिये गये थे। सारे घर में झाड़ू दे दी गई थी.... सारा समान अपनी जगह था। नौकरों की खुशी का ठिकाना न था। उन्होंने "लंगूर" की बड़ी तारीफ़ की। जब उन्होंने अपने मैले कपड़े कोने में डाल दिये, तो अगले दिन उन्होंने उनको धुला पाया।

"कितना अच्छा भूत है! और कितना काम करता है!" ज़मीन्दार के नौकरों ने सोचा।

इस तरह जब बहुत दिन बीत गये, तो गंगा ने एक दिन उस भूत को देखना चाहा। उसमें इतनी हिम्मत आ गई थी कि वह उससे बात तक करना चाहता था। वह सचमुच बड़ा अच्छा भूत होगा, उसने सोचा। अगर वह गन्दा भूत होता तो घर की सब चीज़ें तोड़ फोड़ देता।

यह सोच एक दिन जब सब नौकर जा रहे थे तो गंगा कहीं छुप गया और हवेली के अन्दर ही रह गया और रात के समय "लंगूर" भी आ गया।

गंगा ने घबराते हुए उससे पूछा— "तुम कौन हो? क्यों रोज़ रात में आकर घर का काम करते हो?"

लंगूर ने लम्बी सांस लेकर कहा— "क्या पूछते हो भाई? मुझे यम ने यह दण्ड दिया है। इस जमीन्दार के पिता के समय में मैं इस घर में नौकर था। बड़ा आलसी था। कभी मैंने कोई काम न किया। जब मैं मर कर यम के सामने गया तो उन्होंने मेरी गल्तियों के लिए यह सज़ा दी कि लंगूर के रूप में घर का सारा काम करो। नौकरी की तो खैर, कोई बात नहीं है, यहाँ ठंड में मेरी जो हालत हो रही है, वह भगवान ही जानते हैं। ठंड में ठिठुरना ही शायद असली सज़ा है। आफत है।"

गंगाराम को भूत को देखकर बड़ी दया आई। "मैं और नौकरों से बात करके तुम्हारे लिए कुड़ते और पायजामे का इन्तज़ाम करूँगा। अगर तुमने उन्हें पहिनकर कम्बल ओढ़ लिया तो तुम्हें ठंड न लगेगी।" उसने कहा।

"अगर तुमने यह किया तो मेरे कष्ट खतम हो जायेंगे।" भूत ने कहा।

अगले दिन गंगा ने और नौकरों से कहा। "कल मैंने भूत से बात की थी। वह सरदी के मारे मरा जा रहा है। चूँकि वह हमारा काम कर रहा है, इसलिए अच्छा होगा, यदि हम उसे एक ऊनी कुड़ता और ऊनी पायजामा दे दें। एक कम्बल भी।" उसने, यम ने जो उस भूत को दण्ड दिया था, उसके बारे में भी बताया। नौकरों ने आपस में बात करके भूत के लिए गरम कपड़े लिये और गंगा को उन्हें भूत को देने के लिए कहा।

उस दिन रात को गंगाराम हवेली में रह गया और भूत के आते ही उसने गरम कपड़े और कम्बल उसे दिखाये। भूत उन्हें देखकर बड़ा खुश हुआ। गंगा की मदद से उसने उन्हें पहिन भी लिया। कम्बल ओढ़कर उसने कहा—"अच्छा, तो जाता हूँ।"

"तो, जा क्यों रहे हो? बर्तन तो वैसे के वैसे झूटे ही पड़े हैं।" गंगाराम ने कहा।

"मेरी सज़ा पूरी हो गई है। यम ने कहा था कि यदि मेरे किये हुए काम का मुझे प्रतिफल मिल गया, तो मेरी सजा खतम हो जायेगी। अब मेरे लिए इस घर में नौकरी करने की ज़रूरत नहीं है। मैं इसलिए जा रहा हूँ।" यह कहकर भूत चला गया।

अगले दिन से नौकरों को अपना काम स्वयं करना पड़ा। फिर भी वे खुश थे, क्योंकि वे डर गये थे कि यदि जमीन्दार का नमक खाकर यदि उन्होंने उसके लिए काम न किया तो वे भी भूत बना दिये जा सकते थे।

भाग्य ऐश्वर्य से अच्छा है

एक गाँव में एक साधारण किसान के एक लड़का हुआ। उस दिन भाग्य ने किसान के घर आकर कहा—"मैं भाग्य देवी हूँ। मैं तुम्हारे लड़के की देख रेख करती रहूँगी। चूँकि मैं ऐश्वर्य देवी नहीं हूँ इसलिए मैं तुम्हारे लड़के को अनन्त सम्पत्ति तो नहीं दे सकती। पर कदम कदम पर मैं उसका साथ दे सकती हूँ।"

यह सुन किसान और उसकी पत्नी बड़े खुश हुए। यह ही हमारे लिए परम भाग्य है।

भाग्य देवी की सहायता से किसान को लड़का राहुल बड़ा होने लगा। यदि कभी उसका पैर फिसलता और वह गिरता तो भाग्य देवी जहाँ वह गिरता, उस भूमि को कोमल कर देती। अगर वह किसी से लड़ता तो भाग्य देवी दूसरे के चोटों को बेअसर कर देती और राहुल की चोटों पर निशाने पर लगने देती। राहुल जो काम करता उसका ठीक ठीक फल मिलता। यदि दुर्भाग्य कभी, राहुल की ओर आता लगता तो सौभाग्य उसे भगा देता।

इस प्रकार राहुल बड़ा हुआ और अपने पिता के खेत में काम करने लगा। वहाँ भी सौभाग्य ने उसका पूरा साथ दिया। जो कुछ वह बोता वह खूब बड़ा होता। जब फसल पकती तो पक्षी वगैरह आकर उसे न खाते। अगर आन्धी पानी आकर औरों की फसल खराब करते तो उसकी फसल को कुछ नहीं होता और खेतों में काम करने वालों में, सच कहा जाये तो

राहुल ही सबसे कम काम किया करता। उसे काम करना भी अच्छा न लगता था। परन्तु हर साल खेती बढ़ती जाती और अधिक फायदेमन्द होती जाती।

"यह सब उस भाग्य की ही कृपा है। जो कुछ तू छूता है, अगर वह सोना हो जाता है तो यह उसकी ही दया है।" राहुल के माँ बाप ने कहा।

"भाग्य ने कभी भूलकर मुझे कानी कोड़ी भी न दी।" राहुल ने कहा।

"मैं तुम्हें बहुत-सी सम्पदा नहीं दे सकती....परन्तु मैं तुम्हारे कामों को लाभमय अवश्य कर सकती हूँ।" भाग्य देवी ने राहुल से कहा।

जब पिता गुजर गया तो राहुल को पिता के खेत मिले। गाँव में जैसे उसके खेत थे किसी और के न थे। उसकी हम उम्र के लोग, उसके खेत और उसे देखकर ईर्ष्या किया करते। "चूँकि भाग्य ने तुम्हारा साथ दिया है, इसलिए ही तुम इतने बड़े हुये हो" कई राहुल की इस तरह सराहना करते।

"अरे हल चलाकर उसमें बीज बो देना भी कोई बड़ी बात है?" राहुल ने कुछ खिझकर कहा।

राहुल का असन्तोष देखकर एक बार भाग्य ने कहा—"तुम्हारे पास किस चीज़ की कमी है? क्यों हमेशा इस प्रकार असन्तुष्ट रहते हो?"

"मुझे ऐश्वर्य चाहिए। वह कहाँ है?" राहुल ने कहा।

"अरे जल्दी क्या करते हो? अभी तुम्हारे खेत दस गुना बढ़ गये हैं तुम्हारे पशु भी खूब बढ़ गये हैं। क्या यह सब सम्पत्ति नहीं है?" भाग्य ने पूछा।

"हाँ हाँ जो मैं करता हूँ उसके लिए मुझे अच्छी मज़दूरी मिल रही है। मैंने कब यह इनकार किया है? परन्तु मेरी उम्रवाले बिना हाथ पैर हिलाये मजा कर रहे हैं, ये खेत और ये पशु किसे चाहिए? कभी तुमने थैला भर सोना दिया?" राहुल ने कहा।

"मैंने पहिले ही कहा था कि वह मेरे बस की बात् नहीं है।" भाग्य ने साफ साफ कहा।

उस साल का फसल का पैसा लेकर राहुल, राजधानी गया। वहाँ की वेषभूषा, वैभव, विनोद विलास देखकर राहुल को जलन-सी होने लगी। "जिन्दगी है तो राजा के यहाँ काम करनेवालों की है। सिवाय मजा करने के और कोई काम ही नहीं है।" उसने सोचा।

एक दिन वह राजकुमारी को पालकी में जाता देख कह बैठा। "ओह कितनी सुन्दर है! इस जैसी से शादी करने के लिए, कोई कुछ भी न्यौछावर कर दे तो क्या बात है!"

उसी समय एक आदमी ने जो पास खड़ा था, कहा—"इस प्रकार सोचनेवाले

लाखों हैं। पर क्या फायदा? उस लड़की ने रजतरंजन राजकुमार से प्रेम किया है। उसके पास चान्दी तो है, पर रत्ती भर भी सोना नहीं है। उससे अधिक धनी दामाद की राजा तालाश में है। अन्त में, राजा सबसे अधिक ऐश्वर्यशाली से ही अपनी लड़की का विवाह कर देगा, देखते रहना।"

राहुल अपने जीवन से ही असन्तुष्ट हो गया। भाग्य देवी उसके साथ थी पर राज दरबार में उसका कोई स्थान न था, वह घर वापिस गया और उसने भाग्य

देवी से, जो घर की रखवाली कर रही थी, कहा—"मैंने राजकुमारी से प्रेम किया है? मैं उससे विवाह करूँगा।"

"बहुत मुश्किल है पर फिर भी, जो मुझ से बन सकेगा, मैं अवश्य करूँगी। सौभाग्य से यदि तुमने राजकुमारी की, या राजा की जान बचाई तो...." भाग्य देवी ने कहना शुरु किया।

"अरे, यूँ दाल नहीं गलेगी। राजा, सबसे अधिक ऐश्वर्यशाली को ही अपनी लड़की देगा...." राहुल ने भाग्य देवी को रोकते हुए कहा।

"इसमें क्या है? तुमसे अधिक गरीब भी मेहनत करने कुबेर हो सकता है। चाहो, तो तुम्हें मैं ऐसी जगह दिखाऊँगी जहाँ सोने की खान है, उसे खुदवाओ मेहनत करो।" भाग्य देवी ने कहा।

"मेहनत, मेहनत! अगर बस चले तो मुझे ढेर-सा सोना दो। खान तुम ही रख लेना।" राहुल ने कहा।

"ऐसी चीज़ें मुझ से माँगनी चाहिये।" कहता हुआ ऐश्वर्य देवी उनकी बगल में खड़ी हो गयी।

"तुम क्या दोगी?" राहुल ने पूछा।

"तुम्हारे पीछे पीछे जाने की मुझ में शक्ति नहीं है। तुम तीन वर माँगो। मैं उन्हें देकर मैं चली जाऊँगी।" ऐश्वर्य देवी ने कहा।

"मैं वर माँगने के लिए तैयार हूँ।" राहुल ने कहा।

"इन वरों के देने के बाद फिर मेरी कोई जिम्मेवारी नहीं है। यह पहिले जान लेना ही अच्छा है।" ऐश्वर्य देवी ने कहा।

"मेरी भी जिम्मेवारी नहीं रहेगी यह भी सुन लो।" भाग्य देवी ने कहा।

राहुल, भाग्य देवी से तो तंग था ही इसलिए उसने ऐश्वर्य देवी से इस प्रकार वर माँगे।

एक, मुझसे कोई अधिक सुन्दर न हो। दो, राजाओं को योग्यता और शिष्टता मिले, तीसरा, इतना सोना दो कि वह कभी कम न हो।"

"तीनों दे दिये।" कहकर ऐश्वर्य देवी अदृश्य हो गयी। भाग्य देवी भी राहुल को छोड़कर चली गयी।

राहुल के राज दरबार में जाने में और राजा की दृष्टि में, सब से अधिक सुन्दर समझे जाने में ज्यादह समय न लगा। राजकुमारी तब रजतरंजन रामकुमार को ही प्रेम कर रही थी। परन्तु राजा ने इसकी परवाह न की। "मैं सुवर्णरंजन राजकुमार से तुम्हारा विवाह करूँगा।" राहुल सुवर्णरंजन कहलाया जाने लगा था।

विवाह का समय आया। दुल्हा और दुल्हिन राजमार्ग से जलूस में निकले। जलूस एक नगर के द्वार के पास पहुँच रहा था कि उस पर बैठे पहाड़ी कौव्वे यकायक उड़कर हरे पेड़ पर जा बैठे।

"द्वार का पत्थर उस पर गिरनेवाला है यह इस दुल्हे को बतानेवाला कोई नहीं है।" एक पहाड़ी कौव्वे ने दूसरे से कहा।

और हुआ भी ऐसा ही। दुल्हे के आकस्मिक मृत्यु के कारण, विवाह को रद्द करना, राजा को न जंचा। उसे, रजतरंजन से अपनी लड़की का विवाह करना पड़ा।

सुवर्णरंजन की अन्तिम क्रियायें, बड़े वैभव से हुईं। विशेषतः सुवर्ण दान बड़े वैभव के साथ किया गया। उसके पास अनन्त सोना जो था।

मन्त्र शक्ति

एक समय नेपाल देश मान्त्रिकों के लिए प्रसिद्ध था। वहाँ के मामूली आदमियों में भी कुछ कुछ असाधारण शक्तियाँ थीं। एक गाँव में वर्धक नाम का एक अधेड़ गड़रिया था। एक दिन अपने पशु चराते चराते उसको प्यास लगी और प्यास बुझाने सराय के कुँए के पास आया। तब सराय के बरान्डे में गाँव के बड़े लोग गप्प कर रहे थे। वह वहीं लेट गया।

"क्यों वर्धक! पशु चराने के लिए किसे छोड़ आये हो? यहाँ क्यों पड़े हुए हो?" एक मुखिया ने पूछा।

"उनका कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकता।" वर्धक ने कहा।

सब ने यह सुनकर उसका उपहास किया।

"हँसो मत। चाहे मै यहीं रहूँ, पर पशु मेरी बात सुनते हैं। चाहो तो मै यह दिखा सकता हूँ। दो बछड़ों को यहाँ बुलवाऊँ?" वर्धक ने कहा।

"बुलाओ तो देखें।" लोगों ने कहा।

उसके कहने के कुछ देर बाद ही, दो बछड़े उसकी ओर तेजी से भागे भागे आये। सराय के पास आकर रुके और वर्धक की ओर सिर उठाकर देखने लगे।

"अब जाओ, तुम अपना खाना खाओ।" वर्धक ने कहा। बछड़े वापिस चले गये।

"देखा न! चाहे मैं हूँ या न हूँ, वे मेरी निगरानी में ही रहते हैं।" वर्धक ने कहा।

रमेश

"वे सीधे चरागाह जायेंगे, या किसी के खेत में जाकर फसल खायेंगे ?" एक ने पूछा।

"यह भी कभी न होगा।" वर्धक ने कहा।

कुछ को उसकी बात पर विश्वास न हुआ। वे बछड़ों के पीछे पीछे गये और जैसा कि उनके मालिक ने कहा था, वैसे ही वे चरने लगे।

एक बार और एक इस प्रकार की घटना हुई। गाँव के सेठ ने एक बछड़ा खरीदना चाहा। वह वर्धक को साथ लेकर अपने लोगों के साथ हाट गया। कई बछड़ों को देखने के बाद उन्होंने एक बछड़ा चुना। भाव भी पट गया। सेठ ने बछड़ा खरीदकर वर्धक को देते हुए कहा—"इसे घर ले जाओ।" और वह गाड़ी में अपने लोगों के साथ किसी काम पर कस्बे चला गया।

अभी काफ़ी दिन था, अन्धेरा होने से पहिले सेठ घर वापिस नहीं पहुँचेगा यह सोच वर्धक ने तुरत घर वापिस जाना न चाहा। उसने बछड़े से कहा—"तुम हमारे घर जाओ। मैं पीछे पीछे आ रहा हूँ।" बछड़ा चला गया।

वर्धक ने शाम तक हाट में ही समय काटा। जान पहिचानवालों से गप्प मारता रहा। सूर्यास्त के समय घर की ओर निकल पड़ा। जब वह सेठ के घर पहुँचा, तो वह बछड़ा भी वहीं था, पर वह पशुशाला के बाहर ही लेटा हुआ था। वर्धक उसे उठाकर पशुशाला में ले गया, उसे एक खूँटे से बाँधा और उसको खाने के लिए चारा दिया। वह बछड़ा वर्धक की देख रेख में रहता। पर एक दिन उसने वर्धक को मारना चाहा, उसे आश्चर्य हुआ। उसके बाद जब कभी वर्धक दिखाई

था। वर्धक उस कीकर की टहनी से, झाड़ तो फर्श पर कर रहा था, पर उसके काँटे नौकर की पीठ को खरोंच रहे थे।

"तुम अपनी मन्त्रशक्ति का मुझ पर उपयोग करते हो ? ज़रा सम्भल कर रहो, अगर फिर कभी बछड़े के बारे में कुछ किया, तो तुम्हारी जान निकाल दूँगा।" वर्धक ने नौकर को धमकाया।

नौकर में भी कुछ शक्तियाँ थीं पर वर्धक से कुछ कम ही थीं।

एक बार एक और बात हुई। ग्राम के बड़ों ने अपनी फसल गाड़ियों में कस्बे भेजी। चार पाँच गाड़ियाँ और पाँच दस लोग मिलकर निकले। उनके साथ वर्धक भी था। गाड़ियाँ दुपहर के समय सड़क के पास के एक तालाब के पास पहुँचीं। वहाँ गाड़ीवालों ने बैलों को पानी पिलाया। खुद खाया पिया और पेड़ की छाया में गप्प मारने लगे।

यकायक एक गाड़ीवाले ने कहा—"वह कुत्ता देखो।"

सब को उसकी ओर देखकर आश्चर्य हुआ। चूँकि एक कुत्ता सड़क पर अकेले बिना इधर उधर देखे आ रहा था उसके आस पास कोई न था, पास कोई गाँव भी

देता, तो वह बछड़ा नथने बड़े करके फुंकारता, सिर हिलाता और उसे सींग से मारने की कोशिश करता।

वर्धक जान गया कि कोई मन्त्र लगाकर, बछड़े से उस पर हमला करवा रहा था। उसने कीकर के पेड़ से एक टहनी तोड़ी और उससे पशुशाला में झाड़ देने लगा। थोड़ी देर में कहीं से आवाज़ आई—"अरे भाई मार रहा है...."

पशुशाला में काम करनेवाला एक लड़का ही चिल्लाता कराहता पशुशाला में आया। उसका शरीर खून से लथ पथ

न था। इसलिए वह बहुत दूर से आ रहा था, यह अनुमान किया जा सकता था और उसकी चाल से लगता था, जैसे उसे बहुत दूर जाना हो।

"कुत्ते को इस तरह अकेले जाते हुए कभी किसी ने कहीं देखा है?" किसी ने पूछा।

वर्धक ने, जो उस कुत्ते को लगातार देख रहा था, कहा—"वह कुत्ता स्वयं नहीं आ रहा है, उसे कोई भेज रहा है।"

"कौन भेज रहा है? और क्यों भेज रहा है?" किसी ने पूछा।

"यह मालूम करना है।" वर्धक ने कहा।

न मालूम उसने क्या किया कि तेज़ी से आता कुत्ता यकायक रुका और यूँ इधर उधर देखने लगा जैसे उसे होश आया हो और जिस रास्ते आया था, उसी रास्ते वापिस जाने लगा।

यह देख कर गाड़ीवालों को अचरज हुआ। जब उन्होंने आगे जाने की सोची, तो वर्धक ने कहा—"जल्दी न करो। इस कुत्ते की बात मालूम करके ही जायेंगे।"

आध घंटे बाद, एक आदमी घोड़े पर सवार हो, उसी ओर से आया जिस

ओर कुत्ता गया था। तालाब के किनारे कुछ आदमियों को देख कर, वह आदमी घोड़े पर से उतरा। "किसने मेरे कुत्ते के बारे में दखल दिया था? तुम अपना काम क्यों नहीं करते, क्यों दूसरों के कामों में टाँग अड़ाते हो?"

"किससे पूछते हो? हमने तो तुम्हारे कुत्ते का कुछ नहीं किया है।" वर्धक ने कहा।

बहुत से गाड़ीवालों को देख, घुड़सवार कुछ सम्भला। वर्धक ने उस आदमी से सच बुलवाया। वह आदमी पशु वैद्य था। कहीं दूर तक कोई पशु वैद्य न था। इस वैद्य में कुछ शक्तियाँ भी थीं। वह अपने कुत्ते को पागल-सा करके जहाँ वह चाहता वहाँ उसे भेज सकता था। वह किसी पशुओं के झुण्ड में चला जाता और किसी पशु को काटकर अपने मालिक के पास चला जाता। यह सोच कि पागल कुत्ते ने काटा है, लोग इस पशु वैद्य को बुलवाते। यह जाकर यह दिखाता, जैसे पशुओं के चारे में कोई दवा मिला दी हो "जिस पशु को कुत्ते ने काटा है, उसे यह खिलाइये। कोई खतरा नहीं रहेगा।" कहकर बहुत-सा पैसा वसूलकर चला जाता। उन दिनों पगले कुत्ते के काटे की कोई दवा न थी। परन्तु उनको क्योंकि पागल कुत्ता नहीं काटता था, इसलिए कोई भय की बात न थी। परन्तु इस पशु वैद्य की प्रसिद्धि हो गई कि यह पागल कुत्ते का काटे का इलाज़ कर सकता था। उसने इस तरह काफ़ी पैसा भी कमा लिया था। परन्तु ऐसे पशु वैद्य की धोखाधड़ी वर्धक के कारण जाती रही।

कृष्णावतार

पुराने जमाने में कालनेमि नाम का एक बड़ा राक्षस था। उसके सौ हाथ और सौ सिर थे। वह देखने में बड़ा भयंकर था। वह सौ शिखरोंवाला काला पर्वत-सा लगता था। वह असाधारण बलवान था। यही नहीं उसको ब्रह्मा से कई वर भी प्राप्त थे।

उन दिनों देवताओं और दानवों में युद्ध हुआ करता था। कभी दानव जीतते, तो कभी देवता जीतते। एक बार युद्ध में देवताओं की बड़ी विजय हुई और उन्होंने दानवों को खदेड़ दिया।

यह जानकर कालनेमि को बड़ा गुस्सा आया। उसने सब दानव सरदारों को बुलवाया। उनको युद्ध के लिए प्रोत्साहित किया और उनको लेकर वह इन्द्र पर आक्रमण करने गया।

इन्द्र के नेतृत्व में देवता और कालनेमि के नेतृत्व में दानवों का भयंकर युद्ध हुआ।

उस युद्ध में कालनेमि ने इन्द्र के साथ और दिक्पालकों को भी हरा दिया। तीनों लोक उसके आधीन हो गये।

विष्णु ने देवताओं की पराजय देखी, पर चूँकि कालनेमि का समय अभी पास नहीं आया था, इसलिए वह कुछ नहीं कर पाये।

परन्तु कालनेमि ने विष्णु को भी जीतना चाहा।

कालनेमि की कथा

उसने विष्णु के पास जाकर कहा—"तुमने हमारे मधुकैटभ को मारा है। हम में मुख्य हिरण्यकश्यपु को अपने नाखूनों से तुमने चीर फाड़ दिया। हमारे बलि को पाताल में डालकर तुमने तीनों लोक ले लिये। हमारी स्त्रियों के अश्रुओं से तुमने देवताओं के खेतों को सींचकर उनकी रक्षा की। उसका बदला लेने के लिए आया हूँ मैं।"

"इन बन्दर घुड़कियों से क्या होता है? क्या कोई सच्चा वीर यूँ शेखियां मारता है? ब्रह्मा के वरों के कारण तुम्हारी आंखों में चरबी आ गई है और तुम यूँ ऊटपटांग काम कर रहे हो। पहिले राक्षसों की जो गति हुई थी, वह तुम्हारी भी होगी। समझे। मैं तुम्हें मारकर देवताओं को उनके स्थान वापिस दे दूँगा।" विष्णु ने क्रुद्ध होकर कहा।

यह सुन कालनेमि क्रुद्ध हो उठा। अपनी भारी गदा उसने गरुत्मन्त पर फेंकी। वह खूब गरजा।

वह गदा गरुत्मन्त को वज्र की तरह लगी। विष्णु चकित रह गया। उन्होंने गरुत्मन्त का दर्द दूर कर दिया, अपने शरीर के साथ उन्होंने गरुड़ का शरीर भी बड़ा किया। हाथ में सुदर्शन चक्र लेकर उसे कालनेमि पर फेंका। उसने जाकर कालनेमि के सिर और हाथों को काट दिया।

परन्तु उस राक्षस के शरीर को वैसा ही खड़ा पा, गरुत्मन्त ने अपने पंखों से इस तरह की आंधी पैदा की, कि वह शरीर गिर गया।

यह देख कालनेमि के साथी राक्षस वीर डर गये और जो जहां था, वहीं चुप रह गया। तब विष्णु ने उनको मार दिया।

राक्षसों के मरते ही, ब्रह्मा, इन्द्र और देवता, विष्णु को देखने आये, उन्होंने उनकी प्रशंसा की।

"अब तुम्हें राक्षसों का भय नहीं रहेगा। पहिले की तरह तुम अपने लोकों का निश्चिन्त हो पालन करो। अब यज्ञ निर्विघ्न चल सकेंगे। परन्तु दुष्ट राक्षसों को एक नजर से देखते रहो।"

फिर वह क्षीर समुद्र में गये और वहां शेषशैय्या पर योग निद्रा में सो गये। विष्णु इस योग निद्रा में थे कि कृतयुग चला गया और त्रेतायुग भी खतम होने को था।

उस समय भूदेवी ने शिकायत की कि भूमि पर प्राणियों का भार अधिक हो गया था. उसकी यह शिकायत सुन देवता, ब्रह्मा के पास गये। ब्रह्मा को साथ लेकर वे विष्णु के पास गये। उन्हें योग निद्रा से उठाया।

विष्णु ने धीमे से आँखें खोलीं। "क्यों इस तरफ़ आये हैं? आप सब सुख से तो हैं न? संसार में कहीं राक्षसों का भय तो फिर नहीं है? आप पर कोई आपत्ति तो नहीं आई है?" उन्होंने कुशलप्रश्न किये।

ब्रह्मा ने हाथ जोड़कर कहा- "महानुभाव, राजाओं में किसी प्रकार की शत्रुता नहीं है। सत्य और धर्म स्थिर हैं। यज्ञ ठीक तरह हो रहे हैं। श्राद्ध आदि, भी ठीक तरह किये जा रहे हैं। किसी को रोग आदि. नहीं है। मनुष्य चिरंजीवी हैं। किसी भी नगर को देखो. ग्राम को देखो. उनमें लोग भरे पड़े हैं। भूदेवी शिकायत कर रही है कि वह इस जनसंख्या को न ढो सकेगी। बिना धर्म हानि के इस भार को कम करने का कोई उपाय आप ही सोचिये। मेरु पर्वत पर आकर आप हमें उपदेश दें कि हमें क्या करना चाहिए। यह हमारा आपसे निवेदन है।

विष्णु उठे। उन्होंने अपने गहने ठीक किये। अपने शंख, चक्र आदि शस्त्र उठाये।

गरुड़ पर सवार होकर क्षण में मेरु पर्वत आये। उस पर्वत पर विश्वकर्मा का बनाया हुआ एक दिव्य मन्दिर था। उसमें एक ऊँचे आसन पर विष्णु बैठ गये बाकी सब भी यथोचित स्थान पर बैठ गये। उस सभा में यक्ष, गन्धर्व, सिद्ध, विद्याधर, नाग आदि आये।

वहाँ भूदेवी बड़ी दुखी हो आयी। उसको देखते ही सब एक साथ बात करने लगे। वायुदेव ने संकेत करके उनको बात करने से रोका। उसने भूदेवी से पूछा कि वह किस काम पर आयी थी।

"आपसे क्या छुपा है? राजा बहुत बढ़ गये हैं। मैं प्रजा के भार से दबी जा रही हूँ। यदि यह भार कम न किया गया, तो मैं जीवित न रह सकूँगी। विष्णु ही मेरी मदद कर सकते हैं। आप सब बड़े लोग तो हैं ही।" भूदेवी ने कहा।

भूदेवी की ये बातें सुनकर सभा में लोगों ने आपस में बातचीत की, फिर ब्रह्मा से कहा—"भूदेवी का भार कम करना हमारा कर्तव्य है। तुम बड़े हो। सृष्टिकर्ता हो। कुछ करो।"

तब ब्रह्मा ने सभासदों से इस प्रकार कहा—

"एक दिन शाम को मैं और कश्यप महामुनि समुद्र तट पर बैठे तत्वज्ञान की बातें कर रहे थे कि चन्द्रोदय के समय गंगा संगम के कारण ज्वार में समुद्र आकाश में उठा। जहाँ हम बैठे थे, वह आया ही नहीं अपितु उसने हमें भिगो भी दिया। मैंने हंसते हुए कहा—"यह क्या है? जरा शान्त रहो। तुरन्त समुद्र

है। इसमें दुष्टता या धृष्टता कुछ नहीं है। उस हालत में क्या मुझे शाप देना ठीक है?"

मैंने तब कहा—"भाई लोकहित में ही मैंने यह बात कही है। तुम पवित्र भरत वंश में पैदा होगे। इस गंगा की सन्तान होगी। इस प्रकार वशिष्ट का शाप पूरा होगा। तब सत्यवती के दो पुत्र होंगे और तब तुम्हारा जीवन खतम हो जायेगा। इस शन्तनु के लड़के विचित्रवीर्य के धृतराष्ट्र और पाण्डु दो लड़के होंगे। तब धृतराष्ट्र के सौ लड़के होंगे और पाण्डु के पाँच। इन सौ लड़कों में और पाँच में राज्य के लिए महायुद्ध होगा। उस युद्ध में भूमि के सब राजा मर जायेंगे। लाखों हाथी, घोड़े, सैनिक मर जायेंगे। भूमि का भार कम हो जायेगा और यह भूदेवी सुखी होगी। कलहकार कलि का अंश धृतराष्ट्र की पत्नी के गर्भ से और यम का अंश पाण्डु के गर्भ से पैदा होंगे। फिर और अंश भी अलग अलग पैदा होंगे।"

शान्त हो गया। महारूप धारण करके गंगा के साथ हमारे सामने खड़ा हो गया। तब मैंने भविष्य के बारे में सोचकर कहा—"समुद्र तुमने अपने राजसीय गुण दिखाये हैं, इसलिए तुम भूमि पर राजा के रूप में पैदा हो। चूँकि तुम मेरे कहने पर शान्त हो गये थे इसलिए तुम शन्तनु नाम से गंगा को पत्नी बनाकर जीओ।"

समुद्र ने मुझे नमस्कार करके कहा—"पर्व के दिन या प्रभंजन के समय या चन्द्रोदय के समय फूल जाना मेरा स्वभाव

ब्रह्मा की ये बातें सुनकर सबने उनका अभिनन्दन किया। उसी समय नारद उस सभा में आया। उसने वीणा बजाकर

गाकर विष्णु और देवताओं का मनोरंजन किया।

विष्णु से उसने कहा—"भूमि पर राजकुलों का नाश, जो ये देवता करना चाहते हैं कैसे बिना तुम्हारी मदद के सम्भव है? भूमि पर तुम्हारा एक अंश का अवतार होना चाहिए बाकी के अंशों को उत्प्रेरित करने के लिए, अन्यथा देवताओं का यह कार्य पूरा न होगा। यही नहीं इन देवांशों से पैदा होनेवालों से भी एक काम न हो सकेगा। उसी के बारे में बताने के लिए मैं इतनी जल्दी यहाँ आया हूँ।

वह यह है। देवता और दानव युद्ध में जो राक्षस मारे गये थे वे सब इस समय भूमि पर मानव रूप में पैदा हुए हुए हैं। राम के द्वारा रावण के मार दिये जाने के बाद उसके भतीजे मधु का लड़का लवण भी राम की आज्ञा पर शत्रुघ्न द्वारा मार दिया गया। शत्रुघ्न ने मधुवन को नष्ट करके मथुर नाम के महानगर को बनवाया है। वहाँ राजाओं की कई पीढ़ियों ने राज्य किया और उसको बड़ा किया। अब वहाँ का कालनेमि कंस के नाम से उग्रसेन नाम के भोज वंश के राजा के पुत्र के रूप में

पैदा हुआ है। पूर्व जन्म के संस्कार अब भी उसमें है। वह अपने पिता को कैद में डालकर स्वयं राजा बन गया है। इसी तरह और भी राक्षस भूमि पर पैदा हो गये हैं। कालनेमि के सब मित्र कंस के भृत्यों के रूप में कालिन्दी के तट पर बृन्दावन में और मथुरा नगरी में हैं। कुछ राक्षस प्राग्ज्योति वंश में पैदा हो गये हैं और नरकासुर की सहायता कर रहे हैं। इन सब राक्षसों को मारने के लिए तुम्हें अवतार लेना होगा।

विष्णु ने यह सुनकर, ब्रह्मा की ओर मुड़कर कहा—"मैं अवतार लूँगा। सृष्टिकर्ता मुझे तुम कहाँ पैदा होने के लिए कहते हो?"

इस पर ब्रह्मा ने कहा—"वरुण के यज्ञ की गौवों को कश्यप ले गया है। कश्यप की अदिति और सुरभि नाम की पत्नियों ने उन्हें वरुण को वापिस करने से रोका। जब वरुण ने मुझ से यह शिकायत की तो मैंने कश्यप और उसकी पत्नियों को मानव जन्म लेने के लिए शाप दिया। वह कश्यप वासुदेव के नाम से कंस के गौवों का पालक है। कश्यप की पत्नियां देविकी और रोहिणी नाम से पैदा हुईं और वे इस समय उसी की पत्नी हैं। तुम अपने को दो भागों में विभक्त करो और वासुदेव की दोनों पत्नियों में प्रविष्ट हो जाओ।" ब्रह्माने यूँ विष्णु को सविस्तार सलाह दी।

विष्णु सन्तुष्ट हुए। सभा विसर्जित हो गई। उन्होंने सबको भेज दिया।

विष्णु स्वयं अपनी जगह क्षीर समुद्र वापिस चले गये।

अरण्य पुराण

[४]

मौवली खाते पीते बलवान हो गया। भेड़ियानी ने दो तीन बार उससे कहा—"शेरखान का विश्वास न करना, वह किसी न किसी दिन तेरे हाथ मरकर रहेगा।"

भेड़ियों का सरदार अकेला बूढ़ा होता जाता था और लंगड़े शेरखान की झुण्ड के जवान भेड़ियां से दोस्ती अधिक होती जाती थी। वे खाने की तलाश में शेर के पीछे फिरने लगे। कुत्तों की तरह उसके पीछे फिरनेवाले भेड़ियों को शेरखान उकसाया करता—इतना बढ़िया झुण्ड है और उसका सरदार क्यों एक बूढ़ा भेड़िया है, क्यों वह एक मनुष्य के बच्चे द्वारा चलाया जा रहा है। सुनता हूँ सभा में तुम में से कोई भी उसे आँखें मिलाकर नहीं देख पाता है। भेड़िये शर्मिन्दा होते।

बघेल को जब यह बात मालूम हुई तो उसने मौवली से कहा—"शेरखान एक दिन तुम्हें मार देगा।" परन्तु मौवली ने हँसकर कहा—"मेरे पीछे झुण्ड है, मदद करने के लिए तुम हो। भालू है। मैं क्यों डरूँ?"

"कितनी बार कहा है कि शेरखान तुम्हारा शत्रु है!" बघेल ने कहा।

"बताया है, तो बताया होगा, मुझे इस समय नीन्द आ रही है। उस शेरखान के बड़े गले और बड़ी पूँछ के सिवाय कुछ नहीं है।" मौवली ने कहा।

अन्तिम पृष्ठ

"सोने का क्या यह समय है! यह भालू जानता है। मैं जानता हूँ। सारा झुण्ड जानता है। हर कोई जानता है।" बघेल ने कहा।

"हाँ, वह छोटा पशु मेरा पास आया था। कह रहा था कि मैं आदमी का लड़का हूँ और मूँगफली उखाड़ना भी नहीं जानता हूँ। उसे मैंने समझाने के लिए नारियल के पेड़ पर दो तीन बार दे मारा।"

"यह गल्ती की, वह छोटा ही सही, चिढ़ानेवाला ही सही, पर तुम को कभी कभी ज़रूरी बातें बताता। ज़रा आँखें खोलो भाई। शेरखान में तुम्हें जंगल में मारने की हिम्मत नहीं है। पर यह न भूलो कि अकेला बड़ा बूढ़ा हो गया है, वह दिन जल्दी आयेगा, जब वह हरिण को न मार सकेगा। पहिले दिन जो भेड़िये तुम्हें देखने के लिए आये थे, वे सब बूढ़े होते जा रहे हैं। छोटे भेड़िये शेर की बात मानते हैं। वह उनको बता रहा है कि भेड़ियों के झुण्ड में आदमी के लड़के का कोई स्थान नहीं है। जल्दी ही तुम जवान होनेवाले हो।

"मनुष्य हूँ तो क्या मुझे अपने भाइयों के साथ नहीं रहना चाहिये? मैं जंगल में पैदा हुआ हूँ! मैं जंगल के कानूनों का पालन करता हूँ। ऐसा कोई भेड़िया नहीं है, जिसने मुझ से पैरों के काँटे न निकलवाये हों। सब मेरे भाई हैं।" मौवली ने कहा।

बघेल शरीर चपटा करके लेट गया। आँखें आधी मूँदकर उसने कहा—"भाई, ज़रा मेरे जबड़े के नीचे तो देखो क्या है?"

मौवली ने देखा कि उसके नीचे बिना बालों का एक स्थल था।

"मेरे शरीर में यह स्थल है, यह बात जंगल में कोई नहीं जानता। मै भी मनुष्यों के बीच पैदा हुआ। मेरी माँ ने उदयपुर के महल में एक पिंजड़े में मनुष्यों के बीच प्राण छोड़े थे। इसीलिए जब तू बच्चा था, मैंने घूँस देकर तुम्हें खरीदा था। मैं जंगल नहीं जानता। मुझे पिंजड़े में रखा जाता और लोहे के तसले में भोजन दिया जाता। एक दिन रात को "मैं बघेल हूँ" यह भावना मुझ में बहुत प्रबल हो उठी। मैं मनुष्यों के हाथ का खिलौना नहीं हूँ। मैंने एक पंजे से ताला तोड़ दिया और चला आया। मैं चूँकि मनुष्यों को जानता हूँ इसलिए ही जंगल में शेर से भी अधिक भयंकर हो घूम फिर रहा हूँ।" बघेल ने कहा।

"हाँ, सिवाय मौवली के जंगल में सब जन्तुओं को बघेल से डर है।" मौवली ने कहा।

"जैसे मैं जंगल में चला आया हूँ, उसी तरह तुम भी अपने आदमियों में जा मिलोगे अगर इस बीच तुम मारे न गये तो।" बघेल ने कहा।

"क्यों? कोई क्यों मुझे मारना चाहता है?" मौवली ने पूछा।

"मेरी ओर तो देखो।" बघेल ने कहा। मौवली ने बघेल की आँखों की ओर देखा। बघेल ने अपना सिर एक ओर करके कहा—"इसीलिए, मैं हालाँकि मनुष्यों में पैदा हुआ हूँ। फिर भी मैं तुम्हारी आँखों में नहीं देख सकता हूँ। भाई मैं तुम्हें चाहता हूँ। परन्तु और तुमसे ईर्ष्या करते हैं चूँकि वे तुम्हारी आँखों में नहीं देख सकते। तुम अक़्लमन्द हो। तुम उनके पैरों पर लगे काँटों को निकाल देते हो और सबसे बड़ी बात यह है कि तुम मनुष्य हो।"

मौवली ये सब बातें नहीं जानता था। फिक्र में उसकी घनी भौंहें सिकुड़ गईं।

"अकड़ कर बात करना जंगल की शिष्टता है। तुम्हारी लापरवाही के कारण तुम मनुष्य हो, ऐसा वे जानते हैं। मुझे ऐसा लग रहा है, जब अकेला हरिण को नहीं पकड़ पायेगा, तब पहाड़ पर सभा की जायेगी। उसके बाद....ठहरो.... मुझे एक बात सूझ रही है, तुम तुरत घाटी में उतर जाओ। मनुष्यों के झोंपड़ों में से एक लाल फूल उठा लाओ।" बघेल ने कहा।

बघेल के लाल फूल का मतलब था आग। जंगल का कोई भी प्राणी आग को आग नहीं कहता। हर प्राणी उससे डरता है। इसलिए उसको वे कई नाम से पुकारते हैं। "अन्धेरे के समय झोंपड़ियों के बाहर जो लाल फूल खिलता है, वही न? ले आऊँगा।" मौवली ने कहा।

"तुमने वही बात कही, जो मनुष्य का लड़का कहेगा। पर यह याद रखो कि वह छोटे छोटे उपलों में बड़ी होती है। अगर एक उपले को लाकर पास रख लिया, तो मौका पड़ने पर वह काम आयेगा।" बघेल ने कहा।

मौवली ने बघेल के गले में प्रेम से हाथ रखते हुए कहा—"तो क्या यह सब शेरखान की ही करतूत है?"

"मेरे तोड़े हुए ताले की कसम।" बघेल ने कहा।

"इसका मय सूद के मैं शेरखान से बदला लूँगा। उस बैल की कसम, जिसके कारण तुमने मुझे खरीद लिया था।" कहकर मौवली निकल गया। (अभी है)

५८. रोमन जलमार्ग

सेगोविया (स्पेन) के ये जलमार्ग (एक्विडेक्ट) दो हजार साल पुराने हैं। इनके पत्थरों को जोड़ने के लिए न चूना लगाया गया है, न सिमेन्ट ही, पिछले कुछ दिनों तक इनमें पानी बहता आया था। आर्चों के बीच में सेगोविया कैथेड्रल दिखाई दे रहा है।

Photo by A. L. Syed
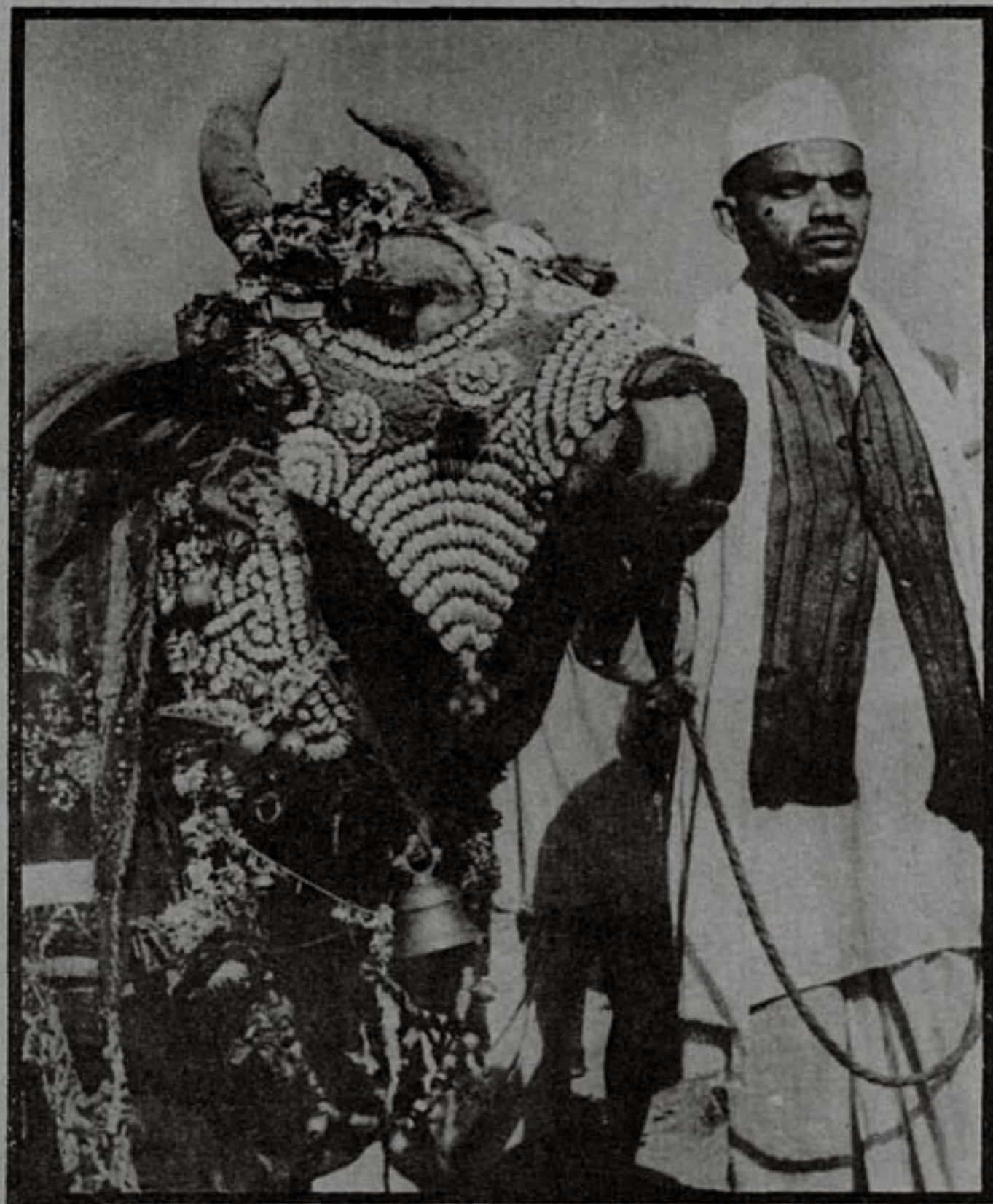
पुरस्कृत परिचयोक्ति

पायी है इसने सुख-संपदा !

प्रेषक : सदानंद जांबावलीकर, आकें

Chandamama, October '66 Photo by Ranbir S. Bakhshi

पुरस्कृत परिचयोक्ति

है भाग्य में इसके आपदा !!

प्रेषक :
सदानंद ाबावलीकर, आ

फ़ोटो - परिचयोक्ति - प्रतियोगिता

दिसम्बर १९६६ :: पारितोषिक १०)

कृपया परिचयोक्तियाँ कार्ड पर ही भेजें !

ऊपर के फ़ोटो के लिए उपयुक्त परिचयोक्तियाँ चाहिए। परिचयोक्तियाँ दो तीन शब्द की हों और परस्पर संबन्धित हों। परिचयोक्तियाँ पूरे नाम और पते के साथ कार्ड पर ही लिखकर निम्नलिखित पते पर तारीख ७ अक्तूबर १९६६ के अन्दर भेजनी चाहिए।

फ़ोटो-परिचयोक्ति-प्रतियोगिता
चन्दामामा प्रकाशन,
वड़पलनी, मद्रास-२६

अक्तूबर – प्रतियोगिता – फल

अक्तूबर के फ़ोटो के लिए निम्नलिखित परिचयोक्तियाँ चुनी गई हैं। इनके प्रेषक को १० रुपये का पुरस्कार मिलेगा।

पहिला फ़ोटो : पायी है इसने सुख-संपदा !
दूसरा फ़ोटो : है भाग्य में इसके आपदा !!
प्रेषक : सदानंद जांबावलीकर,
आके - मडगांव (गोवा)

Printed by B. NAGI REDDI at The B. N. K. Press Private Ltd., and Published by B. VISWANATHA REDDI for Sarada Binding Works, 2 & 3, Arcot Road, Madras-26. Controlling Editor: 'CHAKRAPANI'

"जीवनटोन"

रिजिस्टर्ड नं. २१८७२६

TRADE MARK

संसार में हम दुबले-पतले और निस्तेज आदमी कई देखते हैं। जिनमें बिल्कुकुल बल नहीं होता। "जीवनटोन" एक अत्यंत हितकर दवा है। इसके सेवन से शक्ति, कान्ति, स्नायू बढ़ते हैं। तथा चेहरा और शरीर तेजस्वी बनता है। इसके लिए बाजार में कई दवाएँ बिकती हैं। मगर सबको एक ही दवा से गुण नहीं आता। कई ऐसा समझते है कि "जीवनटोन" मांस से तैयार किया गया है। पर ऐसा नहीं। यह सिर्फ वनस्पती से बनाई हुई औषधी है। खा-पीकर भी शरीर कमजोर दीखता है, इसका कारण क्या?

जिनकी धमनियां कमजोर होंगीं। ऐसे लोगों को "जीवनटोन" उपयुक्त है। इसके सेवन से शक्ति, कान्ति, तेज तथा मांसलता शरीर को प्राप्त होती है। आवश्यकता होने तक ही इसका इस्तेमाल कीजिएगा। तथा बाद में बन्दकर दीजियेगा। इससे नवजीवन, चैतन्य, ओज तथा कान्ति प्राप्त होती है।

४५० ग्राम की कीमत रु. १०-०० (डाक खर्च रु. ३/- अलाहिदा)

ज्योती हास्पिटल

[पो. बॉक्स नं. १४१३]

२८, नार्थ बोग रोड, टी. नगर, **मद्रास - १७.**

रेसिडेन्ट :—**डॉक्टर दामोदर,** M.A.I.A.D.S. (Regd.)